हम्मीर हठ

चंद्रशेखर वाजपेयी कृत

चंद्रशेखर वाजपेयी कृत

हम्मीर-हठ

(टिप्पणी सहित)

सिंह-गमन सुपुरुष-बचन, कदलि फलै इक बार ।
तिरिया-तेल हमीर-हठ, चढ़ै न दूजी बार ॥

संपादक

पं॰ विश्वनाथप्रसाद मिश्र बी. ए., साहित्यरत्न

पूर्व संपादक

स्वर्गीय श्रीजगन्नाथदास 'रत्नाकर' बी. ए.

लहरी बुकडिपो

बनारस सिटी

प्रकाशक
दुर्गाप्रसाद खत्री
लहरी बुकडिपो
बनारस सिटी

तृतीय संस्करण

१००० प्रति, मूल्य— ।=)

मुद्रक
दुर्गाप्रसाद खत्री
लहरी प्रेस
काशी

संपादकीय

'हम्मीर-हठ' हिंदी के खंडकाव्यों में बहुत प्रौढ़ रचना है। भाषा पर लेखक का पूर्ण अधिकार है; वह सानुप्रासिक होते हुए भी स्वाभाविक और चलती है। ऐसी गठी हुई भाषा लिखने में हिंदी के बहुत कम कवि सफल हुए हैं। पदावली का विधान करने में कवि ने रसों और भावों का ध्यान बराबर रखा है; कोमल भावों के साथ भाषा की पदावली कोमल है और उग्र भावों के प्रसंग में पदविन्यास ओजपूर्ण है। आगे चलकर कवियों ने जैसी अव्यवस्थित भाषा का प्रयोग किया वैसी अस्वाभाविक भाषा के दर्शन 'हम्मीर-हठ' में कहीं भी नहीं होते। भावों का निरूपण करने में भी कवि ने बड़ी प्रवीणता दिखलाई है; पात्रों के अनुकूल ही भावों की भी व्यंजना है। केवल वस्तु के विधान में कवि ने एक त्रुटि अवश्य की है। हम्मीरदेव के प्रतिद्वंद्वी अलाउद्दीन में उस शौर्य की प्रतिष्ठा नहीं की गई है जिस शौर्य की प्रतिष्ठा ऐसे वीर के प्रतिनायक में होनी आवश्यक थी। वह बेचारा महल में एक चुहिया के फुदुकने मात्र से डर जाता है और भाग खड़ा होता है। पर इसका कारण यह है कि चंद्रशेखरजी ने प्राचीन काल से चली आती हुई बात को बदलने की चेष्टा नहीं की। रासोकाल से वीरकाव्यों में जिस प्रकार श्रृंगार और वीर की मिली हुई धारा चली आ रही थी और जिसका अनुकरण अन्य हम्मीर-काव्य के लेखकों ने भी किया था, उसे इन्होंने ज्यों का त्यों ग्रहण कर लिया है। फिर भी कवि को उसके परिवर्तित करने का पूर्ण स्वतंत्रता थी। ऐसा न करना एक प्रकार का दोष ही है। कथा के मध्य में आनेवाले प्रसंगों का वर्णन कवि ने बड़ी सुंदरता के साथ किया है; कहीं भी अनावश्यक विस्तार या अरुचिकर बातों का सन्निवेश नहीं है।

प्रस्तुत संस्करण का संपादन करने के लिये हमें रत्नाकरजी के संस्करण के अतिरिक्त और कोई हस्तलिखित प्रति नहीं प्राप्त हुई, इसलिये पाठों का जो रूप हमें रत्नाकरजी के संस्करण में मिला उसी से संतोष करना पड़ा। किंतु टिप्पणी लिखते समय हमने यथाशक्ति सभी शब्दों का अर्थ लगाने की चेष्टा की है। मुसलमानी जमाने में होने के कारण कवि ने बहुत से ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जो अब साधारणतया प्रयोग में नहीं आते। कुछ स्थल एकदम अस्पष्ट हैं, पर ऐसे स्थल वे ही हैं जिनका पाठ रत्नाकरजी ने प्रति के दूषित होने के कारण अस्पष्ट कहकर छोड़ दिया है। इस पुस्तक का संपादन करने में हमने रत्नाकरजी की बातें ज्यों की त्यों रहने दी हैं, केवल उनकी पद्धति पर शब्दों के रूपों में अपेक्षित परिवर्तन कर दिया गया है। यह पुस्तक अब विद्यार्थियों के काम में भी आने लगी है, इसलिये हमने टिप्पणियों में कुछ ऐसे शब्दों का भी अर्थ दे देना आवश्यक समझा जिनका अर्थ देने की साधारणतया कोई आवश्यकता नहीं थी।

'उपक्रम' में रत्नाकरजी ने कवि के विषय में सभी मोटी-मोटी बातें कह दी हैं, इसलिये हमने अलग दूसरी भूमिका लिखने की आवश्यकता नहीं समझी। यदि आगे चलकर इसकी आवश्यकता पड़ेगी तो वह अगले संस्करण में जोड़ दी जायगी। अंत में हम आशा करते हैं कि यह संस्करण सब प्रकार से विद्यार्थियों के लिये उपयोगी सिद्ध होगा।

पौष, १९९०
ब्रह्मनाल, काशी।

विश्वनाथप्रसाद मिश्र

उपक्रम

प्रिय पाठकगण !

आज मुझे वास्तविक में बड़ी प्रसन्नता प्राप्त हुई कि सर्व-शक्तिमान् जगदीश्वर के अनुग्रह से ऐसा अवसर उपस्थित हुआ कि 'हम्मीर-हठ' की पुस्तक पूरी करके आप लोगों के कर-कमलों में अर्पित कर सका। भाषा-काव्य में शृङ्गार के तो अनेक ग्रन्थ छप भी चुके हैं और छपते भी जाते हैं परन्तु वीररस के ग्रन्थों का तो एक प्रकार से अभाव ही समझा जा सकता है। इससे यह नहीं कहा जा सकता कि हमारी मातृभाषा के कवियों ने इस अत्यावश्यक रस का काव्य किया ही नहीं, वरन् इसका मुख्य कारण यह जान पड़ता है कि शृङ्गार की ओर लोगों की रुचि अधिक होने के कारण विशेष प्रचार उसी रस के ग्रन्थों का हुआ। इसमें सन्देह नहीं कि शृङ्गार के ग्रन्थ वीरादि रस-प्रधान ग्रन्थों की अपेक्षा हैं भी अधिक और एतावता सुलभ भी हैं, परन्तु यह बात भी हम अवश्य कहेंगे कि खोज करने से वीरादि रस के भी उत्तमोत्तम ग्रन्थ प्राप्त हो सकते हैं। जैसे एक दूसरे कवि का बनाया हुआ भी 'हम्मीर-हठ', 'भूषण-हजारा' ('भूषण' कवि-कृत जिससे कि शिवाजी के समय की बहुत-सी ऐतिहासिक बातें ज्ञात होती हैं) और फरुख़सियर बादशाह के समय की लड़ाई का वर्णन ('श्रीधर' कवि-कृत) इत्यादि

ग्रन्थ मैंने स्वयं देखे हैं और यदि आप लोगों की रुचि उस ओर देखूँगा तो समयानुसार उनके प्रकाश करने का भी यत्न करूँगा। इसी प्रकार मुझको आशा है कि यदि हमारे देश के लोग खोज करें तो अनेक गुप्त रत्नों का प्राप्त होना असम्भव नहीं है।

इतिहास

इस ग्रन्थ में हम्मीरदेव, रणथम्भगढ़ (जो कि जयपुर के निकट है) के राजा तथा अलाउद्दीन वादशाह की लड़ाई का वर्णन है। इतिहास में इस लड़ाई के विषय में यह लिखा है कि अलाउद्दीन पादशाह का एक सरदार मीर मुहम्मद मङ्गोल नामक भागकर हम्मीरदेव की शरण में चला गया था। पादशाह ने राजा से अपना अपराधी माँगा, पर राजा ने शरणागत का परित्याग न किया। इसपर पादशाह ने सन् १३०० ई० में चढ़ाई की और रणथम्भगढ़ को जय कर लिया। जब पादशाह जय कर चुका तो उसने देखा कि मीर मुहम्मद भी घायल होकर खेत में पड़ा है। पादशाह ने उससे पूछा कि यदि इस समय हम तुमको उठवा ले चलकर औषधि करें तो तुम अच्छे होकर हमसे क्या वर्ताव करोगे? मङ्गोल ने उत्तर दिया कि हम तुम्हारा सिर काटकर हम्मीर वीर के राजकुमार को दिल्ली के सिंहासन पर बैठावेंगे! यह सुनकर अलाउद्दीन ने उसको हाथी से कुचलवा दिया।

इस ग्रन्थ के और इतिहास के वृत्तान्त से इतना विरोध पड़ता है कि इतिहास में तो लिखा है कि पादशाह ने हम्मीर को जीत लिया और वह लड़ाई में मारा गया और इस पुस्तक से यह जाना जाता है कि हम्मीरदेव ने लड़ाई में पादशाह को भगा दिया और गढ़ में लौट आने पर भावी-वश स्त्रियों का

आत्मघात करना ज्ञात करके उसने स्वयं अपना सीस काट डाला। उस समय के इतिहास लिखनेवाले विशेषतः मुसलमान ही थे, फिर क्या आश्चर्य्य है कि उन लोगों ने अपने स्वभावानुसार अपने पादशाह को एक हिन्दू राजा के आगे से संग्राम में भागने के कलङ्क से बचाने के हेतु एक मनमानी कहानी बनाकर लिख दी हो।

इसमें सन्देह नहीं कि इस प्रकार का दोषारोप इस ग्रन्थ के कर्त्ता कविजी पर भी हो सकता है कि इन्होंने हिन्दू राजा की कीर्त्ति बढ़ाने के लिये सच्चे वृत्तान्त को बदलकर कुछ-का-कुछ लिख दिया है। परन्तु उन्होंने इसकी रचना एक प्राचीन चित्रावली के अनुसार की है, जिसको कि मैंने स्वयं पञ्जाब-यात्रा के समय महाराज साहब बहादुर पटियाला के 'सरस्वती-भवन' में देखा। यदि चित्र खींचनेवाले को यह दोष लगाया जाय तो लग सकता है।

पटियाले के पुस्तकालय में सम्वत् १८५५ का बना हुआ एक 'हम्मीर-हठ' जोधराज कवि-कृत भी है। परन्तु मुझे बड़ा खेद है कि ऐसा अवसर न मिला कि मैं उसको आद्योपान्त देखूँ, एतावता मैं यह नहीं कह सकता कि इस विषय पर उसमें क्या लिखा है।

संस्कृत में जो 'हम्मीर-महाकाव्य' नामक ग्रन्थ है, उससे और इस ग्रन्थ से कई बातों में भेद पड़ता है। हम्मीर के मारे जाने के विषय में वह इतिहास के अनुकूल है।

कविता

इस ग्रन्थ की कविता बड़ी मनोहर और उमङ्गवर्द्धिनी है। ओज, माधुर्य और प्रसाद तीनों गुण अपने-अपने स्थान पर

सुशोभित हैं। कवि की प्रौढ़ता अक्षरों से प्रगट होती है। बहुधा कवियों के काव्य में भोंडापन आ जाता है, इस दूषण से भी यह ग्रन्थ रहित है। किस अवसर पर कैसे अर्थ का साधन किन शब्दों के द्वारा करना उचित है, इस बात पर कविजी ने ध्यान रक्खा है और कृतकार्य भी हुए हैं, जैसे कि मीर मुहम्मद के वचन सुनने के उपरान्त हम्मीर के उत्साह प्रगट करने के हेतु इस दोहे ("भुज फरकत हरषत सुनत, सरनागत की बात। बोले बिहँसि हमीर तब, उमँग न गात समात ॥") से बढ़कर और क्या कहा जा सकता है। क्षत्री-जातीय वीरता इससे टपकी पड़ती है। इसी प्रकार मन्त्रियों के समझाने पर जो उत्तर हम्मीर ने दिया ("धड़ नच्चै लोहू बहै, परि बोलै सिर बोल। कटि-कटि तन रन मैं परै, तौ नहिं देहुँ मँगोल॥") इसमें शरणागत की रक्षा करने की टेक और प्रान को धर्मपालन के हेतु कोई वस्तु न समझना, इन बातों को कैसी दृढ़ता से कवि ने प्रकाश किया है। युद्ध का वर्णन कवि ने उत्तम रीति से किया है। "बद्दल समान मुगलद्दल उड़े फिरे" बहुत ही प्रबल पद है। जहाँ हम्मीर के बाहर निकलकर लड़ने का वर्णन है, लड़ाई का एक चित्र-सा खींच दिया है। अन्त में शान्तरस की उदासी का चित्र भी बहुत अच्छी तरह खींचा है।

छन्द भी कविजी जहाँ-तहाँ बदलते जाते हैं, जिससे दो कार्य-साधन होते हैं। प्रथम तो यह कि पढ़नेवाला नये-नये छन्दों के कारण उकताता नहीं और दूसरे यह कि बहुधा जहाँ जो उचित है वहाँ वह छन्द इस अदल-बदल में पड़ जाता है।

इतना कविता की ओर ध्यान दिलाने के हेतु लिख दिया गया, विशेष गुण-दोष पाठक लोग स्वयं ध्यान से विचार सकते हैं।

कविजी का संक्षिप्त जीवनचरित्र

इस 'हम्मीर-हठ' के रचयिता पण्डित चन्द्रशेखरजी वाजपेयी मिति पौष शुक्ल १० सम्वत् १८५५ वि० को मौजवाबाद ज़िला फतहपुर में (असनी के निकट) उत्पन्न हुए थे। इनके पिता पण्डित मनीरामजी वाजपेयी भी अच्छे कवि थे। इनके वंश में काव्य की चर्चा कई पीढ़ियों से चली आती है। पहिले इनके वंश की आजीविका हुण्डी इत्यादि की थी, कविता केवल मन के उत्साह से की जाती थी, पर हंसरामजी के समय से जो कि श्रीगुरु-गोविन्दसिंहजी के कृपापात्र थे, यही जीविका हो गई। पण्डित चन्द्रशेखरजी भाषा-काव्य में असनी-निवासी करनेश महापात्र* के शिष्य थे। १० वर्ष की अवस्था में यह उनके पास बैठाये गये थे। हमारे कविजी संस्कृत के भी पण्डित थे, पर उनके संस्कृत के गुरु का नाम नहीं मालूम।

विद्याध्ययन करने के पश्चात् यह महाशय १२ वर्ष की अवस्था में देशाटन करने के निमित्त घर से चले। उस समय इनके पिता जीवित थे और घर में भगवत-भजन करते थे। पहले चन्द्रशेखरजी दर्भङ्गा की ओर गये और उस प्रान्त के राज-दरबारों में यथोचित प्रतिष्ठा पायी।

सात वर्ष के अनुमान उसी प्रदेश में रहे फिर २६ वर्ष की अवस्था में जोधपुर गये। उस समय वहाँ महाराज मानसिंह सिंहासन पर थे, उनकी सभा में अच्छे-अच्छे बावन कवि उपस्थित थे। यह महाशय बाँकीराम दान चारण के द्वारा दरबार में पहुँचे और यह कवित्त पढ़ा—

---

* महापात्र से महाब्राह्मण न समझना चाहिए। बादशाह की दी हुई उपाधि है जो कि फारसी शब्द "आलीजर्फ़" का उल्था है।

"द्वादस कला सों मारतंड ये उवैंगे चंड,
सेसवारी साँसनि समस्त सत्रु जलिहै।
छूटि जैहै अचल अवास अमरेसवारो,
कूट जैहै कहलि कली-सी भूमि हलिहै॥
'सेषर' कहत अलका मैं कलापात ह्वै है,
पावक पिनाकी के त्रिसूल सों निकलिहै।
तू न तानि भौंहैं भानवंसी भूप मान ना तो,
जानि लैहै प्रलय पयोधि फूटि चलिहै।"

महाराज ने प्रसन्न होकर सौ रुपया महीना उनका कर दिया और वह ६ वर्ष तक वहीं वड़ी प्रतिष्ठापूर्वक रहे, फिर महाराज मानसिंह के स्वर्गवास होने के पश्चात् जब महाराज तख्तसिंह गद्दी पर बैठे तो उन्होंने किफ़ायत करना आरम्भ किया और सबकी तनखाहें आधी कर दीं। कविजी को आधी तनखाह पर रहना स्वीकृत न हुआ और वहाँ से लाहौर की ओर महाराज रणजीतसिंह के पास चले।

अन्न-जल के हाथ बात है, पटियाले में पहुँचकर सरदार जयसिंह सयानी (वर्त्तमान सरदार सुजानसिंह कुँअरजी साहब ड्योढ़ीवाले के पिता) तथा सरदार खुशहालसिंहजी (वर्त्तमान सरदार प्रतापसिंहजी के पितामह) के द्वारा श्रीमहाराज कर्मसिंहजी पटियालाधिपति के दरबार में पहुँचे। इनकी कविता से महाराज साहब बहुत प्रसन्न हुए और पाँच रसद पक्की इनके वास्ते कर दीं। इसके सिवा सवारी इत्यादि का प्रबन्ध ऊपर से कर दिया। फिर तो यह कविजी वहीं रह गये और वहाँ की प्रतिष्ठा के आगे जोधपुर के सौ रुपये भूल गये। यहाँ तक कि जोधपुर से लाड़िलीदास मुंशी महाराज तख्तसिंह के भेजे हुए इनको बुलाने भी आये और कहा कि

आप चलिये आपकी तनख्वाह आधी न की जायगी, पर इन्होंने पटियाले के सन्मान को छोड़कर जाना उचित न समझा। तब से लेकर अन्तकाल पर्यन्त पटियाले ही में रहे। कभी-कभी छुट्टी लेकर वृन्दावन जाया करते थे, क्योंकि उनको वहीं का इष्ट था, "वृन्दावन-शतक" इन्होंने वृन्दावन ही में बनाया था। देहान्त इनका सम्वत् १९३२ में हुआ।

महाराजा कर्मसिंहजी की आज्ञानुसार इन्होंने एक नीति का बृहद् ग्रन्थ रचा। जब महाराज कर्मसिंहजी का देहान्त हुआ और उनका अस्थि-संचयन हो रहा था, उस समय ऐसे गुणग्राहक स्वामी के मरने के कारण यह बड़े विलाप से अश्रु-पात कर रहे थे और बड़े ही उदास और मलीन थे। महाराज नरेन्द्रसिंहजी ने उनकी यह दशा देखी और दरबार जाकर चोब-दार से बुलवाकर कहा कि तुम उदास मत हो तुम्हारा वैसा ही आदर-सन्मान होता रहेगा। उस समय महाराज 'हम्मीर-हठ' की एक चित्रावली देख रहे थे, वह कविजी को देकर आज्ञा की कि तुम इसका वर्णन काव्य में बाँध लाओ। उसी आज्ञा-नुसार उन्होंने यह 'हम्मीर-हठ' रचा।

चन्द्रशेखरजी के बनाये हुए इतने ग्रन्थ हैं :—हम्मीर-हठ, नखशिख, रसिक-विनोद, वृन्दावन-शतक, गुरु-पञ्चाशिका, ज्योतिष का ताजक, माधवी-वसन्त (बड़ा ग्रन्थ है), हरिभक्त-विलास (बड़ा ग्रन्थ है) और राजनीति का बृहद् ग्रन्थ (६००० श्लोक के अनुमान है)। इनमें से नखशिख तो 'भारतजीवन प्रेस' में मैं छपवा चुका हूँ और 'हम्मीर-हठ' 'साहित्य-सुधा-निधि' में प्रकाशित हुआ। यदि यह दो ग्रन्थ आप लोगों को रुचैंगे तो और भी समयानुसार छप जायँगे।

इन कविजी के पुत्र पण्डित गौरीशङ्कर जी वाजपेयी पटि-

याले में वर्त्तमान हैं। यह महाशय बड़े प्रेमी और सुहृद हैं, कविता इनकी बहुत चोखी और रसीली होती है। जब मैं पटि-याले गया था तो मुझसे इनसे प्रतिदिन घटों सत्सङ्ग रहता था। इन्हींकी कृपा से मुझे चन्द्रशेषरजी के कई ग्रन्थ प्राप्त हुए और यह जीवन-चरित्र भी मुझे इन्हीं से मिला, इसलिये मैं उनका चिरबाधित भी हूँ।

जगन्नाथदास (रत्नाकर) बी० ए०,

शिवालय घाट,

बनारस सिटी।

हम्मीर-हठ

(दोहा)

गिरिवरधर अरु गंगधर,-चरन-सरन सिर नाय।
या 'हमीर-हठ' की कथा, कहौं सवहि समुझाय ॥१॥
परसराम ध्रुव भुव अचल, अहि-फन पर जिमि पत्र।
श्रीनरेंद्र मृगराज नृप, तव लगि तव जस-छत्र ॥ २ ॥
श्रीनरेंद्र मृगपति नृपति, दिनप्रति दया-निधान।
दीन जानि कीनी कृपा, मो पर परम सुजान ॥ ३ ॥
निकट वोलि दीन्हों हुकुम, यह 'हमीर-हठ' जौन।
छंद-वंद करिकै रचौ, कथा सोहावनि तौन ॥ ४ ॥
महाराज के हुकुम तें, जिहि विधि चित्र-चरित्र।
सो 'सेखर' भाषा करी, दूषन करेहु न मित्र ॥ ५ ॥
दक्खिन दिसि रनथंभगढ़, तहँ हमीर चहुँआन।
महावीर रन-धीर तेहिं, जानत सकल जहान ॥ ६ ॥
साह अलाउद्दीन इत, उत हमीर हठ धारि।
भयो रायसो दुहुन को, जेहि विधि सो निरधारि ॥७॥
देस दिलीपति दीनपति, दिल्ली-तखत-नसीन।
दूजो सूरज सो तपै, साह अलाउद्दीन ॥ ८ ॥
थरथर कंपै मेदिनी, रवि-रथ झंपै धूरि।
साह अलाउद्दीन जव, सहज चलत कछु दूरि ॥ ९ ॥
असी लक्ख दल-वल सजे, जिहिं दिसि देखत वंक।
तिहि दिसि कोप्यो काल जनु, होत राव सव रंक ॥१०॥

सो इक दिन महलनि गयो, जहाँ जनाने-खास।
सब हजूर हाजिर भईं, हरमैं सहित-खवास ॥ ११ ॥

(कवित्त)

थोरी-थोरी वैसवारी नवलकिसोरी सबै,
भोरी-भोरी बातनि विहँसि मुख मोरतीं।
बसन विभूषन विराजत विमल तन,
मदन-मरोरनि तरकि त्रिन तोरतीं॥
प्यारे पातसाह के परम-अनुराग-रँगी,
चाय-भरी चायल चपल दृग जोरतीं।
काम-अबला-सी कलाधर की कला-सी
चारु चंपक-लता-सी चपला-सी चित्त चोरतीं ॥१२॥

वेगमोवाच—

(सोरठा)

आलिजाह इक बार, हम सबकों लै साथ मैं।
जंगल हरिन-सिकार, खेलौ ये अरजैं करीं ॥१३॥

(दोहा)

अरजैं सुनि आयो वहुरि, पातसाह दरबार।
वरु विचारि मन मैं कियो, खेलौं भोर सिकार ॥१४॥
करि कनात ऊँची खड़ी, कानन के चहुँ ओर।
साज्यो साज सिकार को, पातसाह सिरमौर ॥ १५ ॥

(चौपाई)

सजे आप सुलतान सँभारी। सजीं वेगमैं साज सिकारी ॥
रंग-रंग के सजे तुरंगा। कुल्लह समुद कुमैत सुरंगा ॥१६॥

अमित रंग वरनै को औरै । उड़त कुरंग–संग सब ठौरै ॥
सुवरन साज जीन जरदोजी । जगमगात तन अगनित ओजी ॥१७॥
साखत पेसवंद अरु पूजी । हीरन जटित हैकलैं दूजी ॥
कलँगी सड़क सेत गजगाहैं । यालनि जटित मंजु मुकता हैं ॥१८॥
अंग–अंग वर वने तुरंगा । चढ़े चाव मनु चपल कुरंगा ॥
वेगवंत वरजोर वखाने । सजि-सजि सकल साह-ढिग आने ॥१६॥

(कवित्त)

सुंदर सुसीले सब भाँतिन सजीले खुले,
थान तें थभैं न महि खंडत चलत हैं ।
जोम-भरे जात यों जकंदत जमत तुरी,
जंग मैं न मुरत मतंगनि मलत हैं ॥
चाय सों चपल चंचला से चमकत,
पातसाह के तुरंग जे कुरंगनि छलत हैं ।
हुंकरत हींसत फवत फुंकरत,
फर-मंडल-मँझार दल दीरघ दलत हैं ॥२०॥

(दोहा)

मरदानी सब वेगमैं, आप सूर सुलतान ।
हरषि तुरंगन पै चढ़े, गहि कर वान-कमान ॥ २१ ॥

(सवैया)

खेलि सिकार रहीं सिगरी सजि साह के संग तुरंग चढ़ीं ते ।
स्याम सुरंग हरे पियरे पट मानहु दामिनि मेघ मढ़ीं ते ॥
जेव जड़ाव के जेवर की उमगै अति अंग उमंग वढ़ीं ते ।
सूरज की किरनैं मनो कोटिन मेघन के तन फोरि कढ़ीं ते ॥२२॥

(कवित्त)

चंद की कला-सी विमला-सी चढ़ीं वाजिन पै,
वसन्न–विभूषन–वलित वर वैनी हैं।
किन्नरी नरी-सी जरी हेम की छरी-सी भरीं,
जोवन अनूप–रूप रति–सुखदैनी हैं॥
जोरतिं नयन चित चोरतिं पिया को मुख,
मोरतिं विहँसि चितवनि करि पैनी हैं।
जौनी ओर जातिं वन-वीथिन मैं तौनी ओर,
हेरि-हेरि मारतिं मृगन मृगनैनी हैं॥२३॥

(भूलना)

लगे होन आखेट आरम्भ माहीं,
छिड़े एक–तें–एक तुरंग तीखे।
करैं पौन के संग मैं गौन पूरे,
मनों वाज छूटे कला कोटि सीखे॥
चढ़ीं वेगमैं साह सुल्तान साथैं,
सबै वैस थोरी वड़े रूप पीखे।
गहे वान कम्मान संसेर नेजे,
सुनी वात कानैं लिखी आँख दीखे॥२४॥
कहूँ खींचि कम्मान को वान मारैं,
मृगा जात भागे लगीं पूर छोटैं।
कहूँ खींचि संसेर कों फेरि घोड़ा,
करैं वार द्वै खंड ह्वै भूमि लोटैं॥
कहूँ मारि नेजा दिए डारि केते,
नहीं प्रान छूटैं परे भुंड ओटैं।

मनों जीव पापीन को जम्मराजा,
- दियो दंड सोई सबै धूम घोटैं ॥२५॥

(कवित्त)

खेलत सिकार झारखंड मैं अलाउद्दीन,
मारत मृगनि मृगनैनी लिए संग मैं।
वेगम कहत मरहट्टी * माहताव जैसी,
जगत जुन्हाई जाके जोवन-तरंग मैं॥
देख्यो तिन तहाँ मीर महिमा मँगोल + कहूँ,
काम तें सरस अभिराम रूप-रंग मैं।
हाय मिलै कैसे या कराह मुख लागी,
दुख लाग्यो देन अमित अनंग अंग-अंग मैं॥२६॥
लाग्यो मन मीर सों न धीर धार्‍यो जात उर,
भूली-सी फिरति दुख कासों कहैं गात के।
चित्त चटपटी अटपटी सब वात घात,
वनत न एकौ जात वनत न तात के × ॥

---

* मरहट्टी वेगम से यदि कमलादेवी समझैं तो काल विरुद्ध पड़ता है, क्योंकि कमलादेवी रणथम्भगढ़ की लड़ाई के पश्चात् पकड़ी गयी थी। पर यह सम्भव है कि अलाउद्दीन जव पादशाह होने के पहिले दक्षिण गया था तव कोई सुन्दर मरहट्टी स्त्री वहाँ से लाया रहा हो और उसे अपनी वेगम वना लिया हो।

+ अलाउद्दीन, मीर मुहम्मद मंगोल नामी सरदार से अपनी वेगम से गुप्त व्यभिचार करने के सन्देह पर क्रुद्ध हो गया था। वह भागकर हम्मीरदेव की शरण में चला गया था और उसी के कारण लड़ाई हुई कवि उसी को महिमा मंगोल के नाम से लिखता है।

× पैर को जाते नहीं वनता; जैसे लोग कहते हैं, आँख को [अर्थात् आँख से] देखते नहीं वनता या पाठ यदि 'ता तके' रक्खा जाय तो यह अर्थ हो सकता है कि जाते नहीं वनता. उस ओर देख रही है।

हेर्‌यो तहाँ हरिन कुलंग करि कूद्यो एक,
ताही समै सहसीक साहसन मातके।
तुरत तुरंग करि तातो ताहि ताजन दै,
फफकि फँदाय दियो वाहिर कनात के॥२७॥
हेरति फिरति हरिन को ज्यों हरिन-नैनी,
देख्यो महिमा मँगोल ताके पास जाय कै।
मारे द्वग-वान तान भृकुटी कमान करि,
घायल निदान कहै नजर नचाय कै॥
येरे मीत मेरे मेरी पीर के हरनहार,
वार एक लीजै मोहि उर सों लगाय कै।
तपनिं वुझाय दिल-दुख मिटि जाय नेक,
सुख सरसाय मिलि मोहिं हरषाय कै॥२८॥

मीरोवाच—

(सवैया)

मीर कहै सुन तू मरहट्टी भई कछु वावरी वोलति कैसी।
साहन को पतसाह वड़ो सुलतान प्रिया तिनकी तुम ऐसी॥
प्रीति करौ कि करौ कछु वैर विचारत जो यह वात अनैसी।
डारिहै मारि निकारिहै मोहिं कहूँ सुनिहै जो कही तुम जैसी॥२९॥

(दोहा)

मरहट्टी पुनि यों कह्यो, सुनो मीर मंगोल।
पातसाह की नारि मैं, मेरे वचन अडोल॥ ३०॥

कै मेरो कहिबो करहु, कै अब होहु उदास।
बिन मेरे उर सों लगे, तुम्हैं न जीवन–आस ॥ ३१ ॥
यह सुनि मीर ससंक-चित, भरी वाम निज अंक।
सुख-मोटनि लूटन लगे, जनु पाई निधि रंक ॥ ३२ ॥
जुगल रसीले रस-विवस, सुधि भूली सब ओर।
तब आयो तिनके निकट, सेर एक तिहि ठौर ॥ ३३ ॥
प्रेम-पास कर बँधि रह्यो, चलन न पायो चीर।
सेर सँघार्यो ठौर ही, मीर एक ही तीर ॥ ३४ ॥ *

(त्रिभंगी)

करिकै मनमाने, अति सुख–साने, जात न जाने, जाम–घरी।
उठिकै पुनि सारे, बसन सँवारे, भूषन धारे, रूपभरी ॥
लखि साज-समाजे, रति-पति लाजे, सस्तर साजे, भाँति भली।
मिलिकै निज भीतै, हय रनजीते, चढ़ि वर भामिनि फेर चली॥३५॥
चढ़िकै जब नट्टी, नार मरट्टी, मीर पलट्टी, बाग तहीं।
कहि सुनिए प्यारी, कौतुकवारी, बात न काहू पास कही ॥
सुनि हय मग डारे चाप सुधारे, होत सिकारे धूम जहाँ।
तिनसों मिलि डोलैं, करैं कलोलैं, गरवित बोलैं, बाम जहाँ ॥३६॥

(सवैया)

खेलिकै साह सिकार मुर्यो हरमैं सब साथ सुहात ललामैं।
खूब खुस्याल खुले हियरे करतीं हँसि हेरि करोरि कलामैं ॥
लै सुलतान कों मंदिर मैं अपनी-अपनी मिलि लागि गला मैं।
देत ममारखी बारहि बार करैं सिगरी सब ओर सलामैं ॥३७॥
सुंदर मंदिर मैं सिगरी मिलि सेज सजी सब भाँति सुहाई।
सोहै जहाँ सुलतान सिरोमनि साह सदा सबकों सुखदाई ॥

*३१, ३२, ३४, ३५ अङ्क में नेक ख्लाल के कारण कुछ पाठ बदल दिया गया है।

गावति एक बजावति बीन प्रवीन लिए इक तास तहाँई।
बैठो विनोद-भर्‍यो दिन-दूलह कंत दिलो को दिमाग सवाई ॥३८॥

(चौपाई)

चहुँ दिसि करैं चँवर छवि-बाढ़ी। लीन्हें एक मोरछल ठाढ़ी॥
एकै हँसै हँसावै एकै। सहित-अदाव जाति ढिग एकै॥ ३९॥
साहैं निरखि सबनि सुख ऐसें। चंदहिं निरखि चकोरहिं जैसें॥
यहि विधि सदा संग सब वामैं। पातसाह नित करत अरामैं॥४०॥
इक दिन साह अलाउद्दीन। सैन-सदन सोवत परवीन॥
संग मरहठी बेगम सोवै। रति-पति-संग मनो रति होवै॥४१॥
काम-कला प्रगटी उर सोवत। उठ्यो साह तिय को मुख जोवत॥
जब आनंद सरस रस-पागे। निकस्यो एक सुमूषक आगे॥४२॥*
खरभर सुनत भए उठि ठाढ़े। सिथिल सुअंग भंग सुख गाढ़े॥
गहि कमान छाँड़े सर चारि। मूस मारिकै दीन्ही डारि॥४३॥

(दोहा)

हाजिर पास खवास जे, जे नाजिर सब धाम।
सब मिलि देत मुबारकी, झुकि-झुकि करैं सलाम॥४४॥
जियो बहादुर चारि जुग, साह अलाउद्दीन।
यह सुनिकै सनमुख हँसी, मरहट्ठी मतिहीन॥ ४५॥
पातसाह पूछ्यो बहुरि, कहु हँसिबे को हेत।
हाथ जोरि परसत पगनि, प्रगट न उत्तर देत॥ ४६॥
पातसाह जब हठ पर्‍यो, नैन तरेरे जान।
कह्यो आज पिय माफ करि, करिहौं अरज विहान॥४७॥

---

* ४२ वें अङ्क की तीसरी तुक और ४३ वें अङ्क की दूसरी तुक में भी पाठ बदल दिया गया है।

लिखि कागद कर मैं दियो, खोजा एक पठाय।
कहि महिमा मंगोल कों, भोर होत भजि जाय ॥४८॥

(सवैया)

नाजिर आनि दियो कर कागद भाजु कही उठि देर न लावै।
खोल खलीतो लिख्यो यह बाँचत भाजियो राति न बीतन पावै॥
मीर तुरंग मँगाय तुरंत भयो असवार विचारत जावै।
जाउँ कहाँ केहि के ढिग मैं यहि औसर मैं मोहि कौन बचावै॥४९॥

(कवित्त)

बाजी खुर-थारनि पहार करै छार, गढ़
गरद मिलावैं जोर जंगन जकत है।
ल्यावै आसमान तें पताल तें पकरि, पारावार
तें कढ़ावै थाह लेत न थकत है॥
संक न करत लंकपति सों जुरत जंग,
जो हिकै जमात जम छोभनि छकत है॥
काल तें कराल या अलाउद्दीन पातसाह
ताको चोर चारों ओर राखि को सकत है॥५०॥

(सवैया)

सोचत मीर चलो मग जात लखै नहिं ठौर कहूँ सरने को।
जाउँ जहाँ जिहि के ढिग सो न सकै छिन राखि डरै लरने को॥
एक यहै रनथंभ को खंभ अहै चहुँआन अजौं अरने को।
दंड भरै न हमीर हठी हर बार जुरै न मुरै मरने को॥ ५१॥

(दोहा)

तब आयो रनथंभ मैं, चलि महिमा मंगोल।
लखि रचना गढ़-कोट की, भयो अडोल अबोल॥ ५२॥

जब भीतर कों पग दियो, तब वोले दरवान ।
कित तें आए कौन तुम, उहाँ न पैहौ जान ॥ ५३ ॥

मीर मंगोलोवाच—

(भुजंगप्रयात)

कहाँ धाम है वीर हम्मीर केरो ।
उहाँ जाइवे को वड़ो काम मेरो ॥
अरे वीर मैं मीर मंगोल भाखौ ।
वचैं प्रान मेरे उहाँ मोहिं राखौ ॥ ५४ ॥
सुनी प्रान के राखिवे की जु वानी ।
दुरे आनि पीछे यही वात जानी ॥
गहे वाँह एकै मिले औ जुहारे ।
कहैं पुन्य के पाहुने हौ हमारे ॥ ५५ ॥
लगे अंग एकै गए संग लागे ।
जहाँ वीर हम्मीर के धाम आगे ॥
गए भूप के भौन मैं और दौरे ।
तहाँ आनि आगे दुवौ हाथ जोरे ॥ ५६ ॥

दरबानोवाच—

(दोहा)

हिंद-धनी हिम्मत-धनी, हौ नृप समर-अडोल ।
मीर सरन तेरी पर्‍यो, है महिमा मंगोल ॥ ५७ ॥
भूप वुलायो आप ढिग, तब आयो तहँ मीर ।
हाथ जोरि ठाढ़ो भयो, बोलत वचन गँभीर ॥ ५८ ॥

मीरोवाच—

(सवैया)

बात बनी न कछू हमसों तेहि कारन तें सुलतान रिसाने।
डारिहै मारि विचारि यहै तुरतै तिहि ठौरहिं छाँड़ि पराने॥
वीर वली चहुँआन सुनौ रनथंभ के थंभन आप वखाने।
प्रान के राखनहार निहारिकै आनि परे सरने सव जाने॥५६॥

(दोहा)

मैं आयो तेरी सरन, तू अब लेहि उबारि।
उभै लोक तेरो विमल, जस गैहैं जुग चारि॥ ६० ॥
भुज फरकत हरषत सुनत, सरनागत की वात।
वोले विहँसि हमीर तव, उमग न गात समात॥६१॥

हम्मीरदेवोवाच—

(छप्पय)

उवै भानु पच्छिम प्रतच्छ दिन चंद प्रकासै।
उलटि गंग वरु वहै काम-रति-प्रीति विनासै॥
तजै गौरि अरधंग, अचल ध्रुव-आसन चल्लै।
अचल पौन वरु होय, मेरु मंदर-गिरि-हल्लै॥
सुरतरु सुखाय लोमस मरै, मीर संक सव परिहरौ।
मुख-वचन वीर हम्मीर को, वोलि न यह वहुरो टरौ॥६२॥
खसै भानु-विम्मान, विकल तारा, ससि झंपै।
अचल अवनि असमान, दसौ दिसि थरथर कंपै॥
गर्ज्जै घन घनघोर, जोर मारुत सव चल्लै।
संकरवन फुंकरै, काल हुंकरै उतल्लै॥

मरजाद छोड़ि सागर चलै, कहि हमीर परलै करन।
आलाउद्दीन पावै न तउ, मैं मँगोल राख्यो सरन ॥६३॥

(दोहा)

मंत्री बहुरि मुसाहिबनि, बहुत कह्यो समुझाय ।
पै हमीर राख्यो सरन, सीस रहै कै जाय ॥ ६४ ॥

राजोवाच—

(दोहा)

धड़ नच्चै लोहू बहै, परि बोलै सिर बोल ।
कटि-कटि तन रन मैं परै, तउ नहिं देहुँ मँगोल ॥६५॥

(पुराना—दोहा)

"सिंह-गमन सुपुरुष-वचन, कदलि फलै इक बार ।
तिरिया-तेल हमीर-हठ, चढ़ै न दूजी बार"* ॥

(पद्धरी)

यहि भाँति मीर महिमा मँगोल ।
जब गयो भाजि सरनै अडोल ॥
तब पातसाह आलाउद्दीन ।
पुनि रोज दूसरे खबर लीन ॥ ६६ ॥

---

* चन्द्रशेखरजी की प्रति में यह दोहा इसी भाँति लिखा है। पर इसके दोनों तुकान्त में 'बार' पड़ता है। बाबू हरिश्चन्द्र ने इस दोहे को यों छापा है—

"सिंह-सुवन सुपुरुष-वचन, कदलि फलै इस सार ।
तिरिया तेल हमीर-हठ, चढ़ै न दूजी बार ॥"

पर इस पाठ में पहिले चरण के अन्त में 'इस सार' आता है। 'इस' शब्द पुरानी भाषा में प्रचलित कम था। पाठ में कुछ गंड़बड़ अवश्य है। ['इस' के स्थान पर अब 'इक' पाठ प्रचलित है—सं०]

बैठो इकंत इक ठौर जाय।
तहँ लीन तौन तरुनी बुलाय॥
तेहि आय तुरत कीन्हीं सलाम।
अति रूपवंत मरहठी वाम॥ ६७॥
सनमुख निहारि पुनि नैन मोरि।
बैठी समीप जुग हाथ जोरि॥
जब रहीं और कोऊ न पास।
रहि गईं चारि हाजिर खवास॥६८॥
तब पातसाह तेहि ओर देखि।
वह बात बहुरि पूछी बिसेषि॥
अति चतुर आप आलाउद्दीन।
हँसि हेरि बैन बोले प्रवीन॥ ६९॥

पादशाहोवाच—

(पद्धरी)

सुनि नारि तोहिं पूछौं बहोरि।
तुम करत केलि मुख लियो मोरि॥
पुनि मोहिं तीर मारत निहारि।
या हँसी कहा मन मैं विचारि॥७०॥

बेगमोवाच—

(दोहा)

लै हरमैं सब संग मैं, सजि सिकार को साज।
जिहि दिन जंगल मैं गए, आप गरीबनेवाज॥ ७१॥

मीर पर्‌यो मेरी नजर, खेलत तहाँ सिकार।
मेरे लागे मदन-सर, मोहिं न रही सँभार ॥ ७२ ॥
मैं तुरंग तातो कियो, तुरत गई तेहि पास।
सुख-समूह अतिसय लह्यो, आनँद सहित-हुलास॥७३॥

(सोरठा)

आवत सेर निहारि, गहिं कमान इक तीर लै।
मीर सुडार्‌यो मारि, भयो सिथिल नहिं संक तें ॥७४॥
मार्‌यो चूहो आप, दई बधाई सबन ही।
या सूरता अमाप, दृगनि देखि बाढ़ी हँसी ॥ ७५ ॥

(पद्धरी)

यह सुनत चढ़ीं भौंहैं कमान।
दृग विषम बान-से लिए तान ॥
उठि आमखास बैठो सु आय।
हाजिर हजूर सब भए धाय ॥ ७६ ॥
यह आप हुकुम दीनो सुनाइ।
महिमा मँगोल की खबर ल्याइ।
है कहाँ खोजि करि लेहु अंत।
लीजै मँगाइ ताको तुरंत ॥ ७७ ॥
जानत सु एक तहँ रह्यो कोय।
कर जोरि अरज करि उठ्यो सोय ॥
साहानसाह आलम-निवाज।
रनथंभ-कोट चहुँआन राज ॥ ७८ ॥

* ७२ वें अङ्क की दूसरी तुक और ७४ वें अङ्क की दूसरी तुक भी कुछ-कुछ बदल दी गयी है।

हम्मीरदेव हिम्मत-उदार।
संग्राम सिंह थाहत अपार ॥
महिमा मँगोल ताकी पनाह।
बैठो अडोल तिन गही बाँह ॥ ७६ ॥
बरु उलटि गंग पच्छिम बहाय।
चूकै न बोल चौहानराय ॥
सुनि कियो कोप आलाउद्दीन।
मोल्हन* बुलाय यह हुकुम कीन ॥८०॥

पाद्शाहोवाच—

(पद्धरी)

चढ़ि तू तुरंत रनथंभ जाय।
हम्मीरदेव चौहानराय ॥
कहियो बुझाय गढ़वी गँवार।
मत हो पतंग पावक मँझार ॥ ८१ ॥
महिमा मँगोल दीजै निकारि।
पुनि सहित-दंड देवलकुमारि ॥
दीजै तुरंत दिल्ली पठाय।
मत वैर आप हाथनि बढ़ाय ॥ ८२ ॥
मोल्हन सलाम कीन्ही बहोरि।
उठि चल्यो सामुहें हाथ जोरि ॥

* यह नाम कवि का कल्पित है, क्योंकि यह शब्द फारसी अरबी का नहीं है, एतावता मुसलमानों का नाम नहीं हो सकता। पादशाह के वजीर का नाम नुसरत खाँ था।

घोड़े हजार इक साथ आन।
रनथंभ ओर कीन्हों पयान ॥ ८३ ॥
हिंदू अनेक बहु मुसलमान।
गहि अस्त्र-सस्त्र सज्जित जवान ॥
मोल्हन उजीर पहुँच्यो तुरंत।
रनथंभ-कोट देख्यो अगंत ॥ ८४ ॥
पुनि गयो कोट-भीतर उजीर।
ठहराय पौरि पर और भीर ॥
साईस एक बाजी-सवार।
चलि गयो आप ड्यौढ़ी-अगार ॥ ८५ ॥

(दोहा)

आवत देखि उजीर कों, अरज करी दरवान।
ल्याइ वेगि हाजिर करो, हरष कही चहुँआन ॥ ८६ ॥
तब उजीर हाजिर भयो, मोल्हन माथ नवाय।
हाथ जोरि सनमुख तहाँ, बैठ्यो आयसु पाय ॥ ८७ ॥

(सोरठा)

लखि गढ़ रनथंभोर, मोल्हन करत विचार मन।
यह हमीर बरजोर, कैसेहुँ कह्यो न मानिहै ॥ ८८ ॥

(दोहा)

मोल्हन-बदन मलीन लखि, साहसीक रनधीर।
महाराज राजन-सिरे, बोले बचन गँभीर ॥ ८९ ॥

राजोवाच—

(चौपाई)

कहु मोल्हन आयो केहि कामा । है तो परम कुसल आरामा ॥
पुनि है कुसल गेह मैं तेरे । जो अयान अरु वृद्ध घनेरे ॥ ६० ॥
जो है दिल्ली-तखत-नसीन । पातसाह आलाउद्दीन ॥
सो तौ है अनंद-सुख-सानौ । यह मोल्हन तुम मोहिं बखानौ ॥६१॥
सहित-गुमान गरब आतंक । सुनि राजा के बचन निसंक ॥
तब उजीर दोऊ कर जोरि । मोल्हन बोल्यो बचन बहोरि ॥६२॥

वजीरोवाच—

(दोहा)

महाराज सोई कुसल, सदा सहित-परिवार ।
पातसाह जा पर करै, कृपा एकहू बार ॥ ६३ ॥
मोहिं पठायो आप पै, साह अलाउद्दीन ।
चहत अरज कीन्ही सु मैं, जो कछु आयसु दीन ॥६४ ॥

(झूलना)

कही साह सल्लाह की बात मोसौं,
सुन्यो भाजि आयो इहाँ मीर खूनी ।
इसी वासते आपने मोहिं भेजा,
उसे दीजिए वेग मंगाय हूनी ॥
करौ साथ कुंवारि देवल्लताई,
भरो दंड बैठे करो राज दूनी ।
यहै बात मेरी कही मानि लीजै,
नहीं नेक मैं होयगी राज सूनी ॥६५॥

राजोवाच—

(झूलना)

कहै वीर चोहान हम्मीर हट्ठी,
सुनौ साँच उज्जीर मोल्हन्न ये रे ।
गड़ा-मंडला आदि उज्जैन सारे,
जिते कोट बंके तिते जानि मेरे ॥
रहै साह राजी चहै बंब बाजी,
कहौं एक ना एक-सौ-आठ फेरे ।
पर्यो मीर पाछैं धर्यो दंड डोला,
दियो जात नाहीं कहौं पास तेरे ॥६६॥

मोल्हनोवाच—

(झूलना)

सुनो बीर चौहान गुम्मान छोड़ो,
अहंकार मैं जात संसार मारो ।
असी लच्छ सावंत औ सूर प्यादे,
जहीं साह गाजी चढ़ै सज्जि सारो ।
डिगै मेरु डोलै मही भानु झंपै,
परै देखि आकास मैं चंद तारो ।
डरै काल कुब्बेर सुरेस कंपै,
किती बात तेरी, कह्यो कान डारो ॥६७॥

राजोवाच—

(झूलना)

चलै सेस डोलै मही मेरु हल्लै,
महारुद्र सो तीसरो नैन खोलै ।

चहूँ ओर तोपैं चलैं वान छूटैं,
झकाझोर संसेर की मार वोलै ॥
उठैं रुंड भू मैं परे मुंड लोटैं,
भरे कुंड लोहू वहे वीर डोलै ।
चले प्रान जावैं कटैं गात सारे,
टरै वात ना जौन हम्मीर वोलै ॥६८॥
दुवौ जोरिकै हाथ मोल्हन्न बोल्यौ,
सुनो राय चौहान या बात मेरी ।
कही साह सो वेग मंगाय दीजै,
यहै मंत्र नीको गुनौ लाख वेरी ॥
करै सामनो कौन सुल्तान आगे,
किसे काल कोप्यो महामीच घेरी ।
परै बाज-सो टूटिकै साह गाजी,
उड़ैं रंक पंखी जिती ताव तेरी ॥६६॥

राजोवाच—

(सवैया)

मोल्हन वात न सो वद्लैं अव जो प्रथमैं मुख सौं हम काढ़ी ।
मैं अपने वल वैर कियो किन मीच रहै सिर-ऊपर ठाढ़ी ॥
दीन मुहम्मद कौं करि खीन मलीन करौं मुख की छबि बाढ़ी ।
कै सुलतान की सान रहै कै हमीर हठी की रहै हठ गाढ़ी ॥१००॥

मोल्हनोवाच—

(कवित्त)

डोला भेजि दीजै जौन माँगत दिली को पति,
मोल्हन कहत सीख मेरी सीस धरु रे ।

माँगत मतंग सत सहस तुरंग मानु,
महिमा मँगोल कों बुलाय संग करु रे॥
जीवन जगत नर-देही दुरलभ जानु,
जासों बचै जीव सो जतन अनुसरु रे।
दीपक के संग जैसे जरत पतंग तैसे,
जंग कै हमीर हठधारी तू न मरु रे॥ १०१॥

राजोवाच—

(सवैया)

मोल्हन बोल सँभारि न बोलत बारहिं बार विवाद बढ़ावै।
जो गहि मारहुँ तोहि इहाँ सुलतानहिं कौन जवाब सुनावै॥
लोक करै अपलोक सबै जुग चारिहूँ दूत बध्यो नहिं जावै।
मैं अपनी अपकीरति के डर बात सहौं सब दैव सहावै॥१०२॥

(कवित्त)

सकल अमीरन के आगे या सँदेसो मेरो,
मोल्हन सुनाइयो अलाउद्दीन गाजी कों।
माँगत प्रथम गढ़ गजनी हमीर फेरि,
दीजै अलीखान* सो सहीस निजु बाजी कों॥
दीजै भेजि हरम हजूर मरहट्टी बेगि,
चाहिए जो कुसल तखत सिर-ताजी कों।
तुमसे मिलैं जो पातसाह पाँच और तौ,
हमीर गढ़-चक्कवै चहत रन-साजी कों॥१०३॥

* कवि ने पादशाह के बेटे का नाम अली खाँ कल्पित किया है; यह नाम पादशाह के किसी बेटे का नहीं था। अलाउद्दीन के भाई का नाम अलग खाँ तो अवलत्तः था, शायद उस नाम को भ्रम से कवि ने अली खाँ कर लिया हो तो आश्चर्य नहीं।

(दोहा)

सुनि मोल्हन चहुँआन के, अचल वचन डर-हीन।
सिर नवाइ माँगी विदा, तब नृप आयसु दीन॥ १०४॥
विदा भयो आयो तुरत, दिल्लीपति के धाम।
हुकुम पाय भीतर गयो, सब मिलि कियो सलाम॥ १०५॥
पातसाह पूछन लगे, कहु कैसो विरतंत।
हाथ जोरि सिर नायकै, मोल्हन अरज करंत॥ १०६॥

मोल्हनोवाच—

(कवित्त)

आलम-निवाज सिरताज पातसाहन के,
गाज तें दराज कोप नजर तिहारी है।
जाके डर डिगत अडोल गढ़धारी,
डगमगत पहार औ डुलत महि सारी है॥
रंक जैसो रहत ससंकित सुरेस भयो,
देस-देसपति में अतंक अति भारी है।
भारी गढ़ जारी सदा जंग की तयारी धाक,
मानै ना तिहारी या हमीर हठधारी है॥ १०७॥

(छप्पय)

हुकुम न मानै एक, मीर मंगोल न देवै।
डोला दंड न देय, कहै नहिं आवन सेवै॥
माँगे उठत रिसाय, नैन राते करि हेरै।
धरै मुच्छ पर हाथ, बहुरि निरखै समसेरै।
मान्यो न मोहिं अपजस-डरनि, अति गढ़पति गाढ़ो अहै।
चहुँआन धनी रनथंभ को, खंभ रोपि जूझन कहै॥ १०८॥

माँगै बैठो आप, बहुरि तुमसों सुनि लीजै।
अलीखान कों भेजि, नारि मरहट्ठी दीजै॥
गढ़ गजनी दै देहु, खैर तब दिल्ली जानौ।
यह सँदेस मुख आप, राय चौहान बखानौ॥
सुनु पातसाह मोल्हन कहै, जुद्ध हेत सनमुख खरौ।
निरसंक संक मानै न कछु, आप कोटि उद्यम करौ॥१०९॥
यह जवाब साहानसाह, आलम-निवाज सुनि।
कियो कोप मुख चढ़ी ओप औरै अनूप पुनि॥
दियो हुकुम सावंत सूर सेना सँवारि सब।
अस्त्र-सस्त्र सबकों बुलाय बकसौ तुरंत अब॥
हयबर मतंग तोपन सहित, करिय कूच आरंभ को।
मारौ हमीर डारौ उलटि, कोट कठिन रनथंभ को॥११०॥

(दोहा)

कोपि साह सेना सजी, प्यादे हय-गय मत्त।
संजे सूर-सावंत सब, सुमुख समर-अनुरत्त।१११॥

(कवित्त)

चंचल चलाँके वेगवंत बर बाँके,
बंकता के आसमान जे कसत करि तंग के।
सोहत असीले हेम-हीरन सजीले,
गरबीले गुन-आगर सजीले अंग-अंग के॥
माखैं मन समर-सपूती अभिलाखैं लाल
आँखैं करि लखत उमंग अंग जंग के।
ताजी तेजलच्छी पौन-पच्छी से उड़ात सजे
कच्छी पातसाह के सुलच्छी रंग-रंग के॥११२॥

कारे कद भारे भीम दीरघ दँतारे जौन,
जलधर-धारैं ज्यों फूहारैं फुफुकारे ते।
चूमैं चंद-मंडल उदंड सुंडादंडनि सों,
कुंडन ज्यों सोखैं सिंधु सलिल अपारे ते॥
पगन धरत मग धरनि धुजावैं,
धूरि लावैं निज ऊपर अतोल बलधारे ते।
प्यारे श्रीअलाउदीन पातसाहवारे,
पीलवानन सँवारे जे मतंग मतवारे ते॥ ११३॥

(भुजंगप्रयात)

जरीदार बन्नात की झूल झंपै।
सिरीचंद सों सुंड औ मुंड ढंपै॥
अँवारी कसी हेम की लाल ऐसी।
मनों मेरु पै मंडपी भानु कैसी॥ ११४॥
सजे सूर सावंत जे सस्त्रधारी।
लसे अंग संग्राम की साज सारी॥
धरं टोप कुंडी कसे कौच अंगं।
झिलिम्मैं घटाटोप पेटी अभंगं॥ ११५॥
लिए खग्ग खंडा प्रचंडा दुधारे।
तमंचे छुरी सेल नेजा सँभारे॥
लिए चाप तूनीर मैं तीर पूरे।
चले साह के संग मैं जंग-सूरं॥ ११६॥
मतंगं मँगायो चढ्यो साह गाजी।
चढे सूर-सावंत औ वंब वाजी॥
जुझाऊ बजैं राग मारू अलापैं।
चढै रंग बीरं सुने कूर काँपैं॥ ११७॥

(दोहा)

दस सहस्र सावंत अरु, धवल सूर वहु लीन।
असी लक्ख पायक-सहित, चढ्यो अलाउद्दीन ॥ ११८॥

(कवित्त)

साजि चतुरंग वीर रंग ह्वै मतंग चढ़ि,
चलत अलाउद्दीन दीन अरजत है।
धाई धाम-धाम धूम धौंसा की धुकार,
धूरि धाराधर धावत धरा पै गरजत है॥
पेल परी गैल मैं मतंग मतवारन की,
अड़त अडैलन तुरंग तरजत है।
धावत प्रवल दल धूजत धरनि फन,
फुंकरत फूरत फनीस लरजत है॥ ११६॥
तहाँ तज्जत तुरंग गलगज्जत गयंद-गन,
वज्जत निसान धुनि धावत दराज।
सुनि धुक्कत धरनि मद मुक्कत महीप,
सब सुक्कत सुरेस सुर सहित समाज॥
पुनि कंपति पुहुमि रवि झंपत गरद्द चलि,
चंपत प्रवल दल दीरघ दराज।
मुख राजय सुरंग चढ़ी अंगन उमंग,
जव साजि चतुरंग चढ्यो साह सितराज ॥ १२०॥
चली छार से करत खुर-धारनि पहार,
अति तायल तुरंगम उड़त जनु वाज।
गिरि बिंध्य तें बिलंद मद झरत मदंध,
दूर ही तें दिगदंतिन दलत गजराज॥

जोर ठौर-ठौर होत गज-घंटन के सोर,
घोर धौंसा की धुकारनि परत जनु गाज।
छवि-छैल सूर-वीर गन दीरघ दराज,
दल साजि चतुरंग चढ़्यो साहि-सिरताज॥१२१॥

(चौपाई)

किया कूच साहन सिरताज। साह अलाउदीन सजि साज॥
चला प्रवल दल दारुन ऐसे। उमड़त सिंधु प्रलै मैं जैसे॥१२२॥
बाजे बहुत जुझाऊ बाजे। सुनत विरद्द वीर गल-गाजे॥
जात नचावत चपल तुरंगा। कसे सस्त्र सोहत सब अंगा॥१२३॥
मग डोलत मतंग मतवारे। गरववंत गिरि-ढाहनहारे॥
चला कटक केहि भाँति बखानौं। पावस-घन घुमंडि नभ मानौं॥१२४॥
अस्त्र-सस्त्र चमकत बहु भाँती। बिज्जु-छटा छूटत जनु जाती॥
धमक धूम धौंसन की ऐसे। गरजत गगन घोर घन जैसे॥१२५॥

(दोहा)

पातसाह-रुख पौन-रुख, दल-बद्दल-समुदाय।
घेरेउ गढ़ रनथंभ-गिरि, इमि चाऱ्यो दिसि जाय॥१२६॥
ज्यों सकोप सुरपति-पुरी, बलि घेरी करि जोर।
पातसाह त्यों कोप करि, घेऱ्यो रनथंभोर॥१२७॥
चहूँ ओर डेरा परे, खाईं-ओट प्रहार।
भटभेरा नेरा रहा, भरि गोली की मार॥१२८॥

(चौपाई)

ठाढ़ो सुरुख मखमली डेरा। लसत कनात सुरुख चहुँ फेरा॥
तनी चाँदनी राजति भारी। झुकति झालरैं मोतिनवारी॥१२९॥
बैठ्यो तहाँ साह-सिरमौर। सनमुख खरे दूरि सब और॥

बैठे सस्त्र-अस्त्र-कर-धारी। प्रथम पौरि पर रक्षक भारी ॥१३०॥
गहगह नौबत बाजति आगे। निज-निज काज करन सब लागे॥
सूर-बीर उतरे सब ठोर। करत विचार देखि गढ़ ओर ॥१३१॥
सावधान डेरा करि लीन्हें। बहुरि जंग-हित उद्दम कीन्हें॥
दल मैं दीन्ह्यो हुकुम पुकारी। अस्त्र-सस्त्र सब धरौ सँभारी ॥१३२॥

(दोहा)

बढ़ि-बढ़ि बाँधे मोरचे, लोग देखि नियराय।
तीर-तुपक की मार मैं, तोपैं दईं लगाय ॥१३३॥
देखि कटक चहुँआन को, तुरत खबर करि दीन।
गढ़ घेऱ्यो सुनि हिंदपति, साह अलाउद्दीन ॥१३४॥
तब हमीर देख्यो कटक, कोट-निकट चहुँ ओर।
जैसे सावन मैं घुमड़ि, नभ घेरत घन-घोर ॥१३५॥

(सोरठा)

बैठो बिहँसत बीर, मीर राखि निज सरन मैं
पातसाह की भीर, मैं हमीर मारौं सकल ॥१३६॥
जहाँ नृपति-सिरमोर, तहँ आयो मंत्री चतुर।
माथ नाइ कर जोर, करत अरज भूपति सुनौ ॥१३७॥

(चौपाई)

पातसाह करि कोप कराल। साजि कटक आयो ततकाल॥
घेरेउ कोट हुकुम परचंड। मीर-सरन अरु माँगत दंड ॥१३८॥
जौ न देहिं तौ होत विनास। दीन्हें वड़ो जगत मैं हास॥
दोऊ भाँति बात यह ऐसी। साँप-छछूँदर की गति जैसी ॥१३९॥
विग्रह मैं कछु भलो न लेखैं। खाली सुलह होत नहिं देखैं॥
महाराज दीजै फरमाय। ताको तुरतै करैं उपाय ॥१४०॥

(दोहा)

भुज फरकत हरखत हिये, विहँसत वदन हमीर।
फेरि हेरि समसेर-दिसि, बोले वचन गँभीर ॥१४१॥

राजोवाच—

(दोहा)

गौरि संभु-तन परिहरै, अचल मेरु चल होय।
बोल्यो वचन हमीर को, चलनहार नहिं कोय ॥१४२॥
सिंधु चलै मरजाद तजि, उलटै अवनि अनंत।
बोल्यो बोल हमीर को, सो नहिं बहुरि चलंत ॥१४३॥
सरनागत पालन करै, अरु वरतै सुचि नीति।
समर सस्त्र सनमुख सहै, यह छत्रिन की रीति ॥१४४॥
लखि दीनन को दुख हरै, करै प्रजा पर प्रीति।
प्रान तजै पर-काज कों, छत्री समर-अजीत ॥१४५॥

(कवित्त)

संकट सुरेस को जथारथ निरखि देह,
दीन्ही है दधीचि पर-स्वारथ प्रमान कै।
करुना कपोत की कहत सिविराज दप,
काटि-काटि अंगन तुला मैं तौलि दान कै॥
दीन्हो सीस जगत-जसीले जगदेव आज,
छत्री मैं हमीर कलि कीरति अमान कै।
प्रगट अकारथ मरन सब ही को हमैं,
राखिबे सरन पर-स्वारथ प्रधान कै ॥१४६॥

(सवैया)

जात मरे मरिहैं जग-जीव जिते धरि देह धरा पर आवैं।
अमृत पान कियो न कोऊ यह जानि लई निहचै सब भावैं॥
है रन तीरथ छत्रिन को पर-स्वारथ की पदवी कहँ पावैं।
मानि जथारथ वात लरौ कलि मैं कवि-कोविद कीरति गावैं॥१४७॥
कोटिन काटि कटारिन सौं तरवारिन मारि करौं घमसानैं।
सुंड-विहीन वितुंड परैं रन रुंड फिरैं रज-श्रोनित-सानैं॥
साह को देउँ पठै जम-लोक हमीर हठी तव मोहिं बखानैं।
कै अब सूरज-मंडल वेधि वसौं हरि के पुर वैठि विमानैं॥१४८॥

(दोहा)

करौ तयारी कोट मैं, सजौ जुद्ध को साज।
मार देखि सीधी करौ, तोपैं प्रथम दराज॥१४९॥
सावधान सब मिलि रहौ, सत्रु न आवै पैठि।
करौ जुद्ध मन सुद्ध ह्वै, निज गढ़ ऊपर वैठि॥१५०॥
तब दिवान सिर नायकै, आयो वहुरि तुरंत।
वैठि वुलाए भूप के, सूर-वीर सावंत॥१५१॥
आइ जुहारे सुनत ही, गहि सव सस्त्र-उदार।
सावधान सागर अचल, धरे सपूती-भार॥१५२॥
जो जेहि लायक ताहि तस, करि आदर-सनमान।
बहुरि सुनायो भूप को, आयसु आप दिवान॥१५३॥

दीवानोवाच—

(चौपाई)

भूप हुकुम दीन्ह्यो यह आज। साज़ौ सकल जुद्ध को साज॥
साह सत्रु सिर पर चढ़ि आयो। करिए कछुक तासु मन भायो।१५४

सुनि हरखे सब सूर घनेरे। उमगे अंग-अंग सब करे ॥
भए अरुनमुख अति मन-माखे। बलगत वचन वीर मुख भाखे।१५५।
कहौ कौन विधि करहिं लराई। मारैं सत्रु समर बरियाई ॥
कटि-कटि अंग धरनि गिरि जावैं। पै रिपु जीवत जान न पावै।१५६।
तब प्रधान सिगरे सँग लीन्हें। गाढ़े सकल मोरचे कीन्हें ॥
लगे बीर सब निज-निज थानैं। चहूँ ओर तें चढ़ीं कमानैं ॥१५७॥
गुरदा चद्दर गंज गुबारे। लिए लगाय तीरकस भारे ॥
तौपैं दईं फेरि अति भारी। मंदर मेरु ढहावनहारी ॥१५८॥
लिए तुपक जरजाल जमूरे। लै भरि भार बान बल-पूरे ॥
गढ़ पर जुद्ध साज सब साजे। बलगत वचन वीरवर गाजे॥१५९॥
सुनत सोर धुनि घोर कठोरा। खरभर परी साह-दल-ओरा ॥
उठि-उठि सस्त्र सँभारन लागे। जहँ-तहँ सकल सूर भय-पागे॥१६०
तुपक तोप जरजाल करारे। भरि-भरि मारु गंज गुब्बारे ॥
चलीं तोप कछु जात न बरनी। कंपत आसमान अरु धरनी।१६१।

(छप्पय)

धूम-धाम-धुंधरित, भूमि असमान न सुज्झै।
मनु घमंडि घन-घोर, दौरि दुहुँ ओर अरुज्झै ॥
तहँ तोड़े चमकंत, घोर घहरंत घमंकैं।
चड सोर चहुँ ओर, सुनत धुव-धाम धमंकैं ॥
गरजंत मेघ तड़पै तड़ित, बज्र-सरिस गोला परैं।
आलाउदीन हम्मीर की, मार परी तोपनि लरैं ॥१६२॥

(कवित्त)

मार परी दुहूँ ओर बिषम बिहद्द घोर,
ठौर-ठौर गोली बान-गोला बरसत हैं।

जैसे प्रलै-काल मैं फनी के फना-मंडल तें,
फैलैं फूतकारनि फुलिगैं सरसत हैं ॥
बरसैं अँगारे कैधौं टूटैं आसमान-तारे,
कोटिन कतारे केतुवारे दरसत हैं ।
तोपैं औनि अंबर कौं कठिन कराल मानौं,
रुद्र-नैन-ज्वालन के जाल भरसत हैं ॥१६३॥

कछू सूझत न पार परी मार वेसुमार,
मढ़्यो भूमि आसमान धूम-धाम घन-घोर ।
मनौं घुमड़ि-घुमड़ि नभ घेरत उमड़ि,
घन गाजत दराज तोप बाजत बजोर ॥
महताव चमकंत रुचि रंजक उड़ंत,
चपला-सी तड़पंत घहरंत करि तोर ।
बरषंत तीर-गोली-दल बुंद-नीर-धार,
परैं गाज तें दराज गुरु गोला ठोर-ठोर॥१६४॥

(भुजंगप्रयात)

दुहूँ ओर सौं घोर यौं तोप बाजैं ।
प्रलै-काल के-से मनौं मेघ गाजैं ॥
हलै मेरु डोलै मही सेस कंपै ।
उठी धूम-धारा धुजै भानु झंपै ॥१६५॥
भई बान-बंदूक की मार भारी ।
मनौं बारि-धारा महामेघवारी ॥
उड़े सोर प्याले निराले चमंकैं ।
घटा-जोट मैं दामिनी-सी दमंकैं ॥१६६॥
लगै कोट मैं आनिकै जोर गोला ।
न पाखान टूटै कहूँ एक तोला ॥

जहीं साह की फौज मैं आनि लागैं।
उड़ैं केतिकौ केतिकौ दूर भागैं ॥१६७॥
लगैं वान-गोली गिरैं सूर ऐसे।
गिरा खात पंछी गिरावाज जैसे ॥
परी मार ऐसी दुहूँ ओर भारी।
परे साह की फौज मैं खग्गधारी ॥१६८॥
फटे टोप कुंडी तनंत्रान फूटैं।
कटे अंग-अंगं नरं-प्रान छूटैं ॥
उठावंत एकै करैं एक जंगं।
लुरैं एक लोटैं परे अंग-भंगं ॥१६९॥

(दोहा)

होत जुद्ध अति क्रुद्ध ह्वै, लरत सुभट रन धीर।
तहँ निसंक चहुँआन-पति, देखत नाच हमीर ॥१७०॥
वाजत ताल-मृदंग-धुनि, नाचत नटी-नवीन।
लसत वीर हम्मीर तहँ, राग-रंग-रस-लीन ॥१७१॥

(कवित्त)

रचित रुचिर मनि-मंदिर मैं राच्यो रंग,
नाचति सुगंध बार-अंगना निहारी है।
मंजु मैनका-सी मंजुघोषा-सी सरस भरी,
रंभा-सी अनूप रूप भूषन सँवारी है॥
ताल-गति-तानैं लेति सात सुर तीनि ग्राम,
भाव भरी करति अलाप सुकुमारी है।
पूरैं सम पायल करत झनकारी नाच,
देखत निसंक या हमीर हठधारी है ॥१७२॥

(सवैया)

होति दुहूँ दिसि मार भयंकर तोपन लोप चहैं करि दीनो।
नाचति बार-बधू गढ़ पै दल-बीच कुलाहल भूतन कीनो॥
ताल-मृदंगन की धुनि होति सुनें उत साह करै मन हीनो।
बीर हमीर हिये हरषै लखि मार भयौ सुलतान मलीनो॥१७३॥

(छप्पय)

तीनि ग्राम सुर सात, होत आलाप राग षट।
लाग-डाँट सम विसम, तान उनचास कोटि वट॥
नचत बार-अंगना बजत मिरदंग ताल तहँ।
लख्यो कोट-ऊपर निहार चहुँआन राज तहँ॥
बैठ्यो हमीर रन-धीर अति, निडर संक मानै न हिय।
आलाउदीन अंतक-सरिस, पातसाह मन कोप किय॥१७४॥
चढ़े नैन भृकुटी कराल, मुख लाल रंग करि।
दाबि दंत, फरकंत अधर बलगंत क्रोध भरि॥
करौं छार छन मैं पहार, धरि कोट उलट्टौं।
दुवन-देस दलमलौं, दलन देसन दहपट्टौं॥
मारौं हमीर पल मैं पकरि, संक न यह मेरी करै।
आलाउदीन जानै न मोहिं, गढ़ गँवार गाढ़ो धरै॥१७५॥

(दोहा)

पातसाह अति क्रोधि करि, दीन्हो हुकुम जरूर।
मुगलबेग उड्डान कों, हाजिर करौ हजूर॥१७६॥
हुकुम पाय उड्डान कों, हाजिर कियो तुरंत।
करि सलाम ठाढ़ो भयो, सूर निकट सावंत॥१७७॥
साह कह्यो उड्डान तें, नाचत नटी निहारि।
ओट न एकौ देखिए, चोट तीर की मारि॥१७८॥

(छप्पय)

करि सलाम उड्डान, लई कर मैं कमान गहि।
प्रथम करी टंकार, फेरि गोसा सँवार तहिं॥
लियो तीर तूनीर माहिं तीछन अति जोई।
रोदे फोंक जमाय, चाप संजित करि सोई॥
तान्यो कसीस भरि कान लगि, वान वीच छाती हनो।
नाचति सो नारि भू मैं परी, चौंकि चमकि चपला मनो॥१७६॥

(कवित्त)

गुननि गहीली गति लेति गरवीली,
अंग-अंग दरसावत उलटि पट-ओट तें।
काम-अवला-सी कला कोटिन करति,
चंचला-सी चित्त चोरति चलत लचि लोट तें॥
लाग्यो वान छाती मैं अचानक विषम,
दृग कौंधा-सो चमकि चकचौंधा लग्यो चोट तें।
हेम की छरी-सी मंजु मोतिन जरी-सी,
किन्नरी-सी टूटि भूमि मैं परी-सी परी कोट तें।१८०।

(दोहा)

तरफराति तरुनी गिरी, सर मार्‍यो उड्डान।
हरषि साह सावस कही, चकित भयो चहुँआन॥१८१॥

(चौपाई)

हरषे पातसाह मन माँही। कियो हमीर सोच लखि ताही॥
प्रथम मंत्र मान्यो कछु नाहीं। हठ करि मंड्यो जंग वृथाहीं॥१८२॥
भयो उदास संक कछु आनी। ऐसी बात मीर जब जानी॥
आयो तहाँ तुरत मंगोल। वोल्यो हाथ जोरि मृदु बोल॥१८३॥

मीरोवाच—

(चौपाई)

महाराज राजन-सिरताज । भए उदास आप केहि काज ॥
तुरत लेत बदलो मैं देखौ । मरो अलाउद्दीनहिं लेखौ ॥१८४॥
कह्यो मीर को सुनि मन भायो । धीरज बहुरि भूप-मन आयो ॥
दिवस दूसरे सोई रंग । लग्यो होन दुहुन दिसि जंग ॥१८५॥
पुनि हमीर गढ़-ऊपर आयो । सुरपति-कैसो साज सजायो ॥
अंग-अंग-प्रति भूषन साजै । निरखत कोटि काम-छवि लाजै ॥१८६॥
उड़त चमर चारो दिसि ऐसे । सरद-घटा रवि-ऊपर जैसे ॥
भूप-भवन बैठ्यो दरबार । दियो नाच को हुकुम उदार ॥१८७॥
बहुरि नटी जब निरतन लागी । देखन लग्यो भूप अनुरागी ॥
देखत साह कोप मन कीन्ह्यो । कोट कटा करिबे मन दीन्ह्यो ॥१८८॥
ताही समय तुरत उठि धायो । लिए कमान-तीर चलि आयो ॥
हाजिर भयो तहाँ पुनि मीर । कहे बचन मंगोल गँभीर ॥१८९॥

मीरोवाच—

(चौपाई)

कहौ आप उड्डान सँघारौं । जासौं जाय सोच मिटि सारौ ॥
हुकुम होय साहैं गहि मारौं । छन मैं छत्र-भंग करि डारौं ॥१९०॥

हम्मीरोवाच—

(दोहा)

साह न मारत काठ को, जो खेलत सतरंज ।
उचित न यह जो डारिए, पातसाह प्रभु भंज ॥१९१॥

(सोरठा)

छोड़ि साह के प्रान, मारि और मेरो हुकुम।
महिमाँ गही कमान, सुनि आयसु चहुँआन को ॥१६२॥

(दोहा)

हाथ जोरि हम्मीर कहँ, महिमाँ गही कमान।
अरध-चंद-सर साधिकै, तानी कान-प्रमान ॥१६३॥
वज्र-सरिस छाड़्यो विषम, मीर तीर परचंड।
पातसाह-सिर-छत्र को, दंड कियो द्वै खंड ॥१६४॥
एक तीर सों काटिकै, छत्र दियो महि डारि।
तव हमीर हर-हर हँसे, सनमुख मीर निहारि ॥१६५॥

(कवित्त)

खंड ह्वै दुटूक पर्‍यो लूक सो लपकि छत्र,
हूक-सी समानी हिये साह सोक सों भरे।
जोहत जके-से चौंकि चलत थके-से सवै,
सुकुर मनावत अमीर अति ही डरे॥
आनि धर्‍यो आगे वान-सहित उठाय,
हेम-हीरन-रचित गजमुकुता लसैं जरे।
मानों आसमान तें नछत्रन-समेत पर्‍यो,
भूमि मैं कलाधर सँपूरन कला धरे ॥१६६॥
छत्र के परत सव ही की छवि छीन भई,
दीन भयो वदन अलाउदीन साह को।
पीर उठी उर मैं अचानक अमीरन के,
धीरज धरै को धार धूजत सिपाह को॥

सहमि गए-से सबै सोचत ससंक कहैं,
खैर करी खालिक़ खुदाय सदराह को।
भयो थो दिली को पति देखत फनाह आज,
दाह मिटि गयो थां हमीर नरनाह को ॥१६७॥

(दोहा)

पीर अमीरन के उठी, धीर तज्यो सुलतान।
तुरत मँगायो आप-ढिग, छत्र-सहित रिपु-बान ॥१६८॥
सर मैं बाँच्यो साह तब, 'गहो वली कर अत्र।
तिय बदले तेरो कियो, मीर भंग सिर-छत्र ॥१६९॥
महिमाँ मीर मँगोल मैं, कर-वर गही कमान।
है दुरलभ अब आपको, जियत राखिबो प्रान' ॥२००॥

(चौपाई)

सर मैं लिख्यो मीर को जौन। बाँच्यो पातसाह तब तौन॥
भयो सपेद बदन दृग झंपै। डोलत दंत गात सब कंपै ॥२०१॥
करत बिचार और सब ठाढ़े। खरभर परी सोच मन गाढ़े॥
पीर मनाय कहत कर जोरी। बच्यो साह साहब गति तोरी ॥२०२॥
साह अलाउदीन सुलतान। करत बिचार छोड़ि अभिमान।
जुद्ध होत बीते दिन एते। कटे कटक कहि जात न जेते ॥२०३॥
अगनित सूर-वीर सावंत। गज तुरंग औ सुतुर अनंत॥
पैदल परे भूमि मैं लोटैं। लगीं बान-गोली की चोटैं ॥२०४॥
तुपक, तीर तोपनि की मार। बरषै मनों मेघ जल-धार॥
गढ़ गाढ़ो छूटब कठिनाई। नर-पाथर की परी लराई ॥२०५॥

(दोहा)

कोट-ओट गढ़पति लरै, अंग न आवत घाव।
दहपट्टत दल दूरि तैं, चढ़त चौगुनो चाव ॥२०६॥

कटा होत दीसत नहीं, मारे सकत न छूटि।
कोट कटक की मार मैं, गयो सकल दल खूटि ॥२०७॥
छत्र-भंग मेरो भयो, मरे सूर-सावंत।
प्रान बचत दीसत नहीं, जानि लियो विरतंत ॥२०८॥

(सवैया)

वीर हमीर हिये हरषै सर-गोलिन की वरषा बरषावै।
जात मरे सिगरे रन-सूर इतै, उत एकौ मरो न लखावै ॥
काटिकै छत्र दियो महि डारि लिख्यो फिर पत्र प्रचारि सुनावै॥
डारिहै मारि उवारिहै को मन सोच यहै सुलतान के आवै ॥२०९॥
मौन भए मन-ही-मन मैं सुलतान विचारत बात अनेकौ।
जो लरिए मरिए इत तौ गढ़ की चढ़ि पैयत घात न एकौ ॥
नाहक जात मरे सिगरे भट आवत हाथ लखात न एकौ।
लौटि चलौ अपने घर कों जो भई सो भई कहि जात न एकौ।२१०।*
दीरघ सोच दिलीपति के दल छीन भयो बलहीन मलीनो।
सान गई अपमान अँगै निज प्रान बचै सोइ उद्दम कीनो॥
हार लई अपने सिर मानि निदान यहै करि आयसु दीनो।
लै अपनो दल संग सबै उठि भाजि चलो सहसा भय-भीनो।२११।

(कवित्त)

मारे गढ़ चक्कवै हमीर चहुँआन,
चक्र डारे गोल गरद मिलाय मद मानी के।
लोटैं रेत-खेत एकै पोटैं लेत-देत एकै,
चोटन-समेत लड़े लाड़िले पठानी के॥

* यदि इसकी पहली तुक यों बदल दें तो तुकान्त शुद्ध हो जाय—'मौन भए मन-ही-मन साह विचारत पै बनै बात न एकौ।'

हारे डर-मारे राह बसन-हथ्यार डारे,
बाहन सँभारै कौन भरे परेसानी के।
भाजे जात दिल्ली के अलाउदीनवारे दल,
जैसे मीन जाल तें परत दिसि पानी के ॥२१२॥
भागे मीरजादे पीरजादे औ अमीरजादे,
भागे खानजादे प्रान मरत बचाय कै।
भाजि गज-बाजि रथ पथ न सँभारैं,
पारैं गोलन-पै-गोले सूर सहमि सकाय कै॥
भाग्यो सुलतान जान बचत न जानि वेगि,
बलित बितुंड पै बिराजि बिलखाय कै।
जैसे लगै जंगल मैं ग्रीषम की आगि,
चलै भागि मृग महिष बराह बिललाइ कै ॥२१३॥
भाजे जात रंक-से ससंकित अमीर,
परैं भीरन पै भीर धरैं धीर न रहैं थिरे।
जंगल की जार मैं पहार मैं पराय परे,
एकै बारि-धार मैं उछार मारिकै पिरे॥
कंपित करी पै साह साहब अलाउदीन,
दीन-दिल बदन-मलीन मन मैं खिरे।
प्रबल प्रचंड पौन-पच्छिमी-हमीर मारे,
बद्दल-समान मुगलद्दल उड़े फिरे ॥२१४॥

(दोहा)

भग्यो प्रबल दल संग लै, दिल्ली को सुलतान।
हरष्यो राय हमीर-उर, गढ़ पर बजे निसान ॥२१५॥
आइ अरज मंत्रिन करी, सुनिए राय हमीर।
हिंदु-धनी हद आपकी, पति राखी रघुवीर ॥२१६॥

गयो साह दिसि आपनी, रह्यो हमारो खेत।
ऐसैं सुजस सुपंथ मैं, ईस्वर सबकों देत ॥२१७॥

(चौपाई)

जंग जीति जब लयो हमीर । भाजी पातसाह की भीर ॥
ऐसी बात सुनी जब कान । रनमल नृपति-बंधु चहुँआन ॥२१८॥
सुजस भूप को सुनि मन माख्यो । मन मैं कूर कपट अभिलाख्यो ॥
यह निहचय तब करो बनाय । पातसाह कों मिलिए जाय ॥२१६॥
करी तयारी सुत लै संग । कछुक ब्याज करि चढ़्यो तुरंग ॥
भाज्यो जात जहाँ सुलतान । पहुँच्यो तहाँ तुरत चहुँआन ॥२२०॥
हय तें उतरि पूत लै साथ । सनमुख चल्यो जोरि जुग हाथ ॥
गज-समीप चलि गयो वहोरि । करि सलाम बोल्यो कर जोरि ॥२२१॥

रनमल्लोवाच—

(दोहा)

सुनौ साहसाहन-सिरे, तव सत्रुन कों साल।
मैं हमीर के बंधु को पुत्र, नाम रनपाल ॥२२२॥
हाजिर भयो हजूर मैं, हार सुनी जब कान।
अरज मानि मेरी मुड़ैं, अब ये फेर निसान ॥२२३॥
चलौ आप दैहौं तुरत, तिल-तिल भेद बताय।
लाय सुरँग छन एक मैं, दीजै गढ़ उलटाय ॥२२४॥
पातसाह सुनि अरज कों, गरज आपनी हेत।
सिरोपाव दै सँग लियो, रनमल पुत्र-समेत ॥२२५॥

(चौपाई)

रनमल-साथ मुड़े सुलतान। बहुरि कोट-दिसि गड़े निसान॥
बहुरि मोरचेबंदी भई। खबर हमीरदेव-ढिग गई ॥२२६॥
सुनत उठ्यो जनु सोवत जागि। उमड़ी अंग क्रोध की आगि।
मारो यहै हुकुम करि दीन्ह्यो। सूरन अस्त्र-सस्त्र गहि लीन्ह्यो।२२७।
दुहूँ ओर तें दारुन जंग। लागेउ होन भूरि भट-भंग॥
रनमल उहाँ भेद जो दीन्ह्यो। पातसाह सो उद्दम कीन्ह्यो।२२८।
गढ़ मैं सोधि सुरंग लगाई। सत सहस्र मन दारू पाई॥
कियो बहुरि ताको बलिदान। महिष एक सत नर इक आन।२२९।
दियो आगि तब उड़ी सुरंग। सहित-कोट गिरि कीन्ह्यो भंग॥
उड़्यो कोट दारू के जोर। भयो भयंकर दारुन सोर ॥२३०॥

(छप्पय)

धूम-धार-धुंधरित, धूरि-धुंधरित धाम धुव।
डिगत कोट डगमगत, कूट डोलंत भूरि भुव॥
भयो सोर परचंड, घोर चहुँ ओर दंड इक।
खंड-खंड गिरिवर विहंडि, डार्‌यो अखंड दिक॥
जिमि चंड-वात बद्दल विहद, उठै घमंड उमंडरे।
तिमि उड़त कोट पव्वै-सहित, दल दव्वै तल छिति परे ॥२३१॥
पर्‌यो सोर चहुँ ओर, घोर सब विकल नारि-नर।
उठी धूरि-धारा अपार, नभ-भूमि छार-भर॥
मारतंड छपि अंधकार छायो दिसान दस।
सोर तोर तहँ ओर, जोर करि सकै कौन कस॥
फूट्यो पहार सतखंड ह्वै, अरधखंड गढ़ भरहर्‌यो।
जुग दंड भयो दारुन सबद, चंड वज्र मानहु पर्‌यो ॥२३२॥

(चौपाई)

उड़ो सुरंग कोट भहरान्यो। परगट पातसाह जब जान्यो॥
लियो प्रधान बालि निज आगे। मुदित हाल सब पूछन लागे।२३३।
उड़ा पहाड़ कोट गढ़ जैसे। कीन्ही अरज जोरि कर तैसे॥
सुनि सुलतान हिये हरषान्यो। आई फते हाथ यह जान्यो॥२३४॥
उड़त कोट चहुँआन निहाऱ्यो। कछुक सोच संका उर धाऱ्यो॥
सबहिन करी अरज धरि धीर। सुनु चहुँआन वीर हम्मीर॥२३५॥
अब यह समय सोच को नाहीं। निहचय याको करौ सलाहीं॥
जीते जंग फते तुम पाई। भाग्यो पातसाह बरियाई॥२३६॥
पातसाह को भागत जानि। तेरो वैर आगिलो मानि॥
रनमल मिल्यो सत्रु की ओर। दियो भेद सिगरो सब ठौर॥२३७॥
सहसा तिन सुरंग लगवाई। दियो कोट अरु कटक उड़ाई॥
टूट्यो कोट कटक बहु खोई। भयो हाल कहि जात न जोई॥२३८॥
यहि विधि भूपहिं अरज सुनाई। सब मिलि रहे आप सिर नाई॥
सुनि सब बात आनि उर धीर। बोल्यो वचन राय हम्मीर॥२३९॥

हम्मीरदेवोवाच—

(दोहा)

सुनौ सपूतो साथिकौ, सब को परै न रोज॥
लियो जात याही समय, हित-अनहित को खोज॥२४०॥
रनमल तो रिपु-सरन मैं, जाइ बचायो प्रान।
दियो भेद सब आपनो, जोर पऱ्यो सुलतान॥ २४१॥
अब हमको या कोट मैं, लरिबो बैठि निसंक।
उचित नहीं एकौ घरी, को राजा को रंक॥ २४२॥
घर-भेदी रिपु के निकट, बैठो करत उपाय।
अनजानत ऐसहिं कहूँ, फेर न देहि उड़ाय॥ २४३॥

यातैं अव कढ़ि कोट तें, बाहिर वंब वजाय।
देखौ दल सुलतान को, कह्यो भूप हरषाय ॥ २४४ ॥

(चौपाई)

सुनिकै वचन भूप-मुख-वर के। हरषे सूर-वीर भुज फरके ॥
उठि निज-निज गृह गए तुरंत। लागे सजन सूर-सावंत ॥२४५॥
आप राय चहुँआन हमीर। तुरत मँगाय गंग को नीर ॥
करि असनान दान बहु दीन्ह्यो। बहुरि विप्र-गुरु-पूजन कीन्ह्यो २४६
लै प्रसाद पुनि बाहर आए। भूषन वस्त्र सस्त्र मँगवाए ॥
बिविध वसन-भूषन तन साजे। माथे टोप मुकुट-सम राजे।२४७।
कसो कठिन पेटी तनत्रान। पहिरी भिलिम भूप चहुँआन ॥
कटि कटारि छूरी तरवारि। कर कमान सर गहे सँभारि।२४८।
सज्यो सूर छाजत छबि ऐसें। चलत काम जीतन जग जैसें ॥
ह्वै तयार नृप वाहन माँगे। सजि तुरंग तव ल्याए आगे ॥२४९॥
चढ़ि चहुँआन वीर हरषायो। तव देवलकुमारि-ढिग आयो ॥
देख्यो कुँवरि तात घर आयो। सहसा उठी सकुचि सिर नायो २५०
करि पियार पुत्री समुझाई। पुनि हमीर सब बात सुनाई ॥
सुनि पितु-वचन सोच मन आनि। बोली कुँवरि जोरि जुग पानि२५१

देवलकुमारी उवाच—

(दोहा)

सुनहु तात मेरी अरज, सुत-वित वारहिं वार।
होत जात लहि नर-जनम, पुनि दुरलभ संसार ॥२५२॥
जीव रहै तौ जग रहै, जीव नए जग जाय।
को सुत को वित कौन के, आवत काम लखाय ॥२५३॥
जीवत ही के काम के, सुत-वित सब परिवार।
मरें न काहू को कहूँ, काहू कियो उवार ॥२५४॥

(छप्पय)

सुनहु तात मन गुनहु, एक उपजी कंकालिनि।
कुल-कलंक लखि कियो, दूर घर तें घरघालिनि॥
कै जानहु इक भई, बाल पुनि नाहर मारी।
कै जनमत मरि गई, एक दासी घरवारी॥
कर जोरि कहै देवलकुँवरि, मो विनती चित मैं धरौ॥
दै देहु मोहि सुलतान कों, अचल राज गढ़ पर करौ॥२५५॥

(सोरठा)

सुनत सुता के वैन, नैन चढ़े फरकीं भुजा।
विहँसत मुख छवि-ऐन, तव हमीर वोले वहुरि॥ २५६॥

हम्मीरदेवोवाच—

(छप्पय)

करौं घोर घमसान, घेरि दल-वल दहपट्टौं।
सुंडनि-रहित वितुंड, मुंड समसेरनि कट्टौं॥
उठै रुंड रन रुधिर-कुंड भरि भूत उमत्थै।
वधौं जुत्थ निज हत्थ, लुत्थ पर लुत्थ उलत्थै॥
आलाउद्दीन मारौं पकरि, देउँ पठै जमलोक को।
वेटी न वोलि काँचो वचन, यह समयो नहिं सोक को॥२५७॥

(दोहा)

ठाढ़े कहि गाढ़े वचन, भूप सुतैं समुझाय।
मिल्यो वहुरि चहुँआन-पति, वड़गूजर सों जाय॥२५८॥

(चौपाई)

जाजा वड़गूजर पै जाई। कह्यो हमीरदेव समुझाई।
जाजा तुम परदेसी लोग। तुम को रहिवो इहाँ न जोग॥२५६॥

तुम अब जाहु आपने धाम। हम सों पर्‍यो सत्रु सों काम।
सूरज अगिनि रुद्र अहि काल। जदपि कोप ये करैं कराल ॥२६०॥
वरषै इंद्र घेरि घन घोर। गढ़ पर सजै प्रलय को तौर॥
तदपि सरन तें देउँ न मीर। केती पातसाह की भीर ॥२६१॥
जाजा जगत जियत जो रैहैं। बहुरि बुलाय गेह सों लैहैं॥
अब तुम जाहु कह्यो करि मेरो। मरिबो इहाँ उचित नहिं तेरो ॥२६२
सुनि हमीर के वचन सुहाए। वड़गूजर मन एक न आए॥
भूप-चरन मैं नायो माथ। बोल्यो बहुरि जोरि जुग हाथ ॥२६३॥

वड़गूजरोवाच—

(पद्धरी)

सुनु महाराज हम्मीरदेव। भर-जनम आपकी करी सेव॥
जिमि रहे बंधु-गृह जन हजूर। तिमि रह्यो मान मेरो जरूर॥२६४॥
दुरलभ जहान मैं भोग जौन। तेरे प्रताप हम करे तौन॥
वाहन अनेक गज रथ तुरंग। धौंसा नकीब सब चले संग॥२६५॥
मनिजटित हेम-भूषन अनूप। हम सजे अंग तब संग भूप॥
दुरलभ जहान मैं वसत जौन। हम किया रोज वकसीस तौन॥२६६
षटरस मँगाय भोजन अनूप। तुम करे मोंहि लै सग भूप॥
तन रोम-रोम मैं पर्‍यो लौन। करि सकत अंग एको न गौन॥२६७॥

(दोहा)

जे जन जाए जार के, ते निज-निज घर जाय।
स्वामी संकट मैं तजै, को एतो सुख पाय॥ २६८॥
स्वामी को संकट परे, जो तजि भाजे क्रूर।
लोक अजस परलोक मैं, जमपुर जात जरूर॥ २६९॥

(सोरठा)

जे भाजत करि भोग, स्वामी को संकट परें।
बसत नरक मैं लोग, जौ लौं ससि-सूरज रहैं ॥ २७० ॥
सुनु हमीर नरनाथ, मैं बड़गूजर जात को।
अब ह्वैहौं दै माथ, उरिन तिहारे लोन सों ॥ २७१ ॥
बोल्यो बहुरि हमीर, साबस जग तेरो जनम।
करौ तयारी वीर, मैं मिलि आऊँ जननि कों ॥ २७२ ॥

(दोहा)

आयो माता के निकट, तब हमीर नर-भूप।
लखी सतोगुन-सकति-सी, बैठी सती-सरूप ॥ २७३ ॥

(चौपाई)

आवत देखि पूत कों आगे। सहसा उठी मात सुख-पागे ॥
समर-साज लखि साजे गात। जियौ सपूत कह्यो अस मात॥२७४॥
तब हमीर दोऊ कर जोरि। बोलेउ वचन विनय-रस-बोरि ॥
जीवन-आस मोहि कछु नाहीं। यह असीस तुम दीन्ह वृथा ही।२७५
छत्री वरस बीस तें आगे। जियै तीस लौं जे वड़भागे॥
सुनौ मात मैं तेरो पूत। मेरो धरम रहै मजबूत ॥ २७६ ॥
करि सुलतान-संग संग्राम। हरिपुर करौं वास अभिराम ॥
यह असीस दीजै परकास। जीवन की कछु मोहिं न आस ॥२७७॥
यह कहि पर्‌यो चरन सिर नाइ। वीर हमीरदेव हरषाइ ॥
सिर धरि हाथ बीर की माता। दई असीस उमँग भरि गाता ।२७८।

मातोवाच—

(दोहा)

तीराँ ऊपर तीर सहि, सेलाँ ऊपर सेल।
खग्गाँ ऊपर खग्ग सहि, रन-सनमुख सुत खेल ॥ २७९ ॥

भुज मुख छाती सामुहैं, घावाँ ऊपर घाव।
पलक न झंपै पूत की, चढ़ै चौगुनौ चाव ॥ २८० ॥
तिल-तिल तन कटि-कटि परै, तेगाँ मुक्ख मुवन्न।
दीधी तोहि असीस मैं, नारी गीत गुवन्न ॥ २८१ ॥
जो जूझै तौ अति भलो, जो जीतै तौ राज।
देति पुकारें मैं सबैं, मंगल गावो आज ॥ २८२ ॥

(तोटक)

जब लौं जननी-ढिग भूप गए। तब लौं सब सूर तयार भए ॥
सजिकै घर तें मन मोद-मढ़े। बढ़ि रँग तुरंग नि माँझ चढ़े ॥२८३॥
सब अंगन सार-सने सरसैं। रिपु को सुनि बाघ मनो दरसैं* ॥
बरछी सर चाप कमान गहे। कटि तें सिर लौं ढकि ढाल रहे ॥२८४
मिलि जुत्थनि जुत्थ वरुत्थ बने। बलगैं मिलि एकन एक घने ॥
मुख-जोस सँभार न रोस-भरे। अति भीम भयंकर सस्त्र धरे ॥२८५॥
बनि बीर सबै नरधीर महा। मग जोवत बीर हमीर कहाँ ॥
तेहि औसर भूप बिनै करिकै। पुनि बैन कहे पग मैं परिकै ॥२८६॥

हम्मीरदेवोवाच—

(छप्पय)

करौं जुद्ध करि क्रुद्ध, आज अवरुद्ध सुद्ध मन।
अरि बिहंडि करि खंड-खंड डारौं गनीम-गन ॥
परै सोर चहुँ ओर घोर, दिन राति न सुज्झै।
गज तुरंग चतुरंग, अंग भरि भूत अरुज्झै ॥

* यह तुक लेखक की भूल से कुछ अशुद्ध लिख गई थी, उसको इस प्रकार से सँवार दिया।

बिन मुंड रुंड धावै धरनि. वचन बोलि चूकौं नहीं।
मोरौं न बाग रन-भूमि तें, मानु मातु मेरी कही ॥ २८७ ॥

(दोहा)

जो ईस्वर कारन कहूँ, उलटे मुरैं निसान।
तब तुम जौहर देखियो, मेरो वचन प्रमान ॥ २८८ ॥
पुनि माता के पग परसि, प्रमुदित राय हमीर।
हरषि तुरंग मँगाय कैं, चढ़्यो वीर रनधीर ॥ २८६ ॥
चढ़त राय हम्मीर के, गहगह बजे निसान।
चढ़े सूर सावंत सब, रूपवान जसवान ॥ २६० ॥

(मोतीदाम)

चढ़े चहुँआन-धनी महराज। चल्यो दल दाबि दिगंत दराज ॥
बजैं बहु बंब निसान अवाज। उठै घनघोर घटा जनु गाजु ॥२६१॥
सजीम जकंदत जात तुरंग। चढ़े रन सूरन रंग उमंग ॥
लसैं सब अंग कसे तन-त्रान। गहे बरछो करवाल कमान ॥२६२॥
झुकी कलँगी सिर सोहत टोप। रही चढ़ि आनन औरइ ओप ॥
चढ़ी भृकुटी दरसैं दृग लाल। भरे रन-रोस मनो रिपु-काल ॥२६३॥
चले जुरि जुत्थ वरुत्थ अनेक। लगे बगलै मिलि एकनि एक ॥
सज्यो मदमत्त मतंग अनूप। हमीर विराजत तापर भूप ॥२६४॥
मनो गिरि कज्जल का मग जात। मढ़े मनि-कंचन सों सब गात
मनो मनि-मंदिर तापर मंड। उदै रवि आप भयो कर-चंड ॥२६५॥

(दोहा)

चल्यो कटक को कहि सकै, ताको बिहद बिवाद।
चल्यो मनो परलय करन, सागर तजि मरजाद ॥ २६६ ॥
ग्रीषम गहर गनीम को, गारब गरब झुकारि।
चढ़्यो प्रबल पावस-नृपति, दलबद्दल-बल धारि ॥ २६७ ॥

(छप्पय)

उठी धूरि धुरवान, धरनि जलधर-दल जुट्टै।
धवल धजा बक-पाँति, छत्र छनदा छवि छुट्टै॥
घुरै वंब घनघोर, विरद बंदी पिक बोलै।
गज तुरंग रथ वेग, विहद हद मारुत डोलै॥
छिति अंधकार छायो सघन, दृग पसारि सूकै न कर।
दीसै न पंथ पावस-नृपति, चढ़्यो साजि दल जलद-चर॥२९८॥

(चौपाई)

बाजे विहद जुझाऊ बाजैं। निरतैं मग तुरंग गज गाजैं॥
पढ़ैं विरद बंदी बरजोर। मढ़्यो राग मारू सब ठौर।२९९॥
धौंसनि धमक धूम छिति छाई। सुनै कौन निज बात पराई॥
चलत कटक डोलत इमि धरनी। प्रबल पवन-हत जिमि लघु तरनी
सहमि सुरेस संक मन माने। धनाधीस तजि धीर पराने ३००
मंदर मेरु कदलि-सम कंपै। फाटत फन फनीस फन झंपै *३०१
करत छार खुर-धार पहारनि। धोवत महि मतंग मद-धारनि॥
महाराज चहुँआन हमीर। राजत मनु सुरेस रनधीर।।३०२॥

(दोहा)

महि कंपै चंपै चरन, रवि-रथ झंपै धूरि।
चढयो राय हम्मीर इमि, जुद्ध हरष भरि पूरि॥ ३०३॥

(छप्पय)

उतै साह आलाउद्दीन, हम्मीरदेव इत।
सजे जुद्ध-हित क्रुद्ध, बरनि को सकै सोभ तित॥

* इसकी चौथी तुक का पाठ ऐसा ही मिलता है।

दुहुँ दिसि खुले निसान, वंब मारू वहु वज्जैं।
पढ़ैं विरद वंदी विलोकि सुर-नायक लज्जैं॥
गज-रथ-तुरंग पायक प्रवल, दल विलोकि दुहुँ दिसि घने।
कुरुखेत करन अरज्जुन मनो, जुद्ध-हेत वहु विधि वने॥३०४॥

(भुजंगप्रयात)

दुहू ओर तें सूर-सेना सिधाई। महा मेघ कैसी घटा घेरि आई॥
महा अस्त्र औ सस्त्र सारे चमंकैं। प्रलैकाल की दामिनी-सी दमंकैं॥
गहे खग्ग खंडा प्रचंडा दुधारे। छुरा सक्ति सूलं सरं चाप धारे॥
लसैं वीर वंके निसंके जुझारे।महा मोद वाढ़े दुहू ओर सारे ३०६
सुनें बीर बाजे बली वीर बाजे। करैं सिंहनादं मनो मेघ गाजे॥
उमंगं भरे रंग जंगै उमाहैं। दुहू ओर सों आपनी जीत चाहैं॥३०७॥
उतै साह आलाउदीनैं गँभीरं। इतै राय चौहान हम्मीर धीरं॥
लसैं मत्तमातंग पै दोउ ऐसे। लसैं स्वर्ग मैं संभु औ सक्र जैसे ३०८

(सोरठा)

आनन औरै ओप, भुज फरकत हरषत हियो।
भए अरुन दृग कोप, देखीदेखा दुहुँन सों॥ ३०९॥
ताते करैं तुरंग, अंग-अंग उमगे सुभट।
चढ्यो चौगुनो रंग, सूरन के तन-वदन मैं॥ ३१०॥

(कवित्त)

आनि जुरे कटक दुहू दिसि तें कोपि मुख,
ओप रन सूरन के सेखी वरसत हैं।
छाई छवि छूटै छटा निनद निसानन की,
बाजे वीर वंब राग मारू सरसत हैं॥
आगे वढ़ि सुभट सुनावैं सिंहनाद,
एक-एक हाँकि हरषि कृपान करसत हैं।

भारथ के पारथ औ भीषम समान ये,
हमीर औ अलाउद्दीन दोऊ दरसत हैं ॥३११॥

(दोहा)

दल दीरघ दोऊ सजे, आए निकट निदान।
दुहूँ ओर सूरन हरषि, गहे सरासन वान ॥ ३१२ ॥
वंदूखैं वीरन सजीं, द्वै-द्वै गोली डारि।
रंजक दै छाती धरीं, जलद जामिकी वारि* ॥ ३१३ ॥
हाँकि-हाँकि मारन लगे, डाँटि-डाँटि रन सूर।
मारु मारु दल दुहुनि मैं, सवद रह्यो भरि पूरि ॥ ३१४ ॥

(कवित्त)

गहर गराव-नक थहरत भूमि मढ़ी,
गगन गरद्द मैं न भानु सरकत हैं।
वरषत गोली वरषा मैं ज्यों जलद,
ज्वान मारैं वान तानत कमान मरकत हैं॥
केते लोट-पोट भए समर सचोट केते,
वाहन पै विकल विहाल लरकत हैं॥
फाटे परे रंजा लौं करेजा टूक-टूक कढ़े,
छाती छेद विसिष विसारे करकत हैं ॥ ३१५ ॥
उतै साह-आलम अलाउद्दीन गाजी इतै,
महावीर नृपति हमीर रन रंग मैं।
दुहूँ देत दलनि दिलासा दुहूँ ओर देखि,
चढ़ै चाँप चौगुनी उमंग अंग-अंग मैं॥

* इसके दूसरे दल का पाठ गड़बड़ है।

† इस कवित्त की प्रथम तुक का पूर्वार्ध स्पष्ट नहीं है।

मारे तीर-गोलिन के भीर न धरति छिति,
गगन समीर न सकत चलि संग मैं।
दारु विन सिंग, वान-रहित निखंग भयो,
जंग भयो दारुन दुहूँ के परसंग मैं ॥ ३१६ ॥

(चौपाई)

बढ़ि-बढ़ि करैं सूर सब वार। परीं वान-गोलिन की मार ॥
लगीं दुहूँ दिसि दारुन चोटैं। घायल परे भूमि मैं लोटैं ॥३१७॥
अंग-भंग रन फिरैं तुरंग। लगे दाव जिमि विपिन-विहंग।
जर-जर गात जात मग भागे। बिकल वितुंड वान वहु लागे ३१८॥
ढीले धनुष भए जिह-टूटे। भे खाली निखँग सर-खूँटे।
दुहूँ ओर पिलि चले तुरंग। पीरी मार नेजन के संग ॥ ३१९ ॥
हाँकि-हाँकि रिपु हनैं सजोर। वरषैं अस्त्र-सस्त्र अति घोर।
खुलीं खग्ग को करैं सुमार। रन मैं परी भयंकर मार ॥ ३२० ॥

(कवित्त)

चले सूल सर सेल दल पेल बगमेल,
परे गोलन पै गोल बोल बचन प्रमान।
भयो घोर घमसान धूरि धाई असमान,
तहाँ आपनो परायो न परत पहिचान ॥
मारु-मारु धरु तोरु सिर फोरु मुख मोरु,
मढ़्यो सोर ठौर-ठौर सुनि परत न आन।
जहाँ पारथ-समान रच्यो भारथ हमीर,
करै बीर रनधीर पुरुषारथ अमान ॥ ३२१ ॥
खुले काल तैं कराल करवालन के जाल,
लाल-लाल मुख [illegible]

परी मार तरवारिन की करत सुमार,
कटे टोप तनत्रान परे भूमि भहराइ॥
परे वाजि विन कंठ, बिन सुंडन वितुंड,
उठे मुंडन विहीन रन रुंड रहे धाइ।
तहाँ पारथ समान पुरुषारथ–निधान,
चहुँग्रान-सिर-मुकुट हमीर दरसाइ ॥३२२॥
जुरे वाजिन सों वाजि अरु गज गजराजि,
पिले पायक प्रवल रन रांस सरसाइ।
उठी ढालन सों ढाल करवाल करवाल,
वीर खंजर-कटारिन हनत हरषाइ॥
परे लुत्थन पै लुत्थ कटे बिहद वरुत्थ,
करकत सर सूल भभकत भरि घाइ।
तहाँ पारथ समान पुरुषारथ करत,
चहुँग्रान-सिर-मुकुट हमीर दरसाइ ॥ ३२३॥
कटी कूँडी टोप कवच सनाह टूक-टूक परी,
झूमि-झूमि भूमि मैं झिलिम झहराइ।
परे झुंडन के झुंड कटे वीर वरिवंड,
कहूँ रुंड कहूँ मुंड कहूँ तुंड तलफाइ॥
भिरैं भूत भीम भैरव भ्रमत रन रुद्र,
जुरि जोगिनी जगावत मसान जस गाइ।
होत जंग मन मुदित उमंग सरसाइ,
हेरि हनत विपच्छिन हमीर हरषाइ ॥३२४॥
चली खेत रनथंभ के विषम तरवार,
मार-मार मुख कढ़त मढ़त तन घाइ।
परे अंग कटि सुभट तुरंग न चलत,
चरबी के चहले मैं चलि सकत न पाइ॥

भरें कुंडन रुधिर रन रुंडन की रासि,
भखैं माँस खग जंबुक पिसाच समुदाइ।
तहाँ बीर बलवान चहुँआन रन-धीर,
खग्ग बाहत हमीर हठधारी हरषाइ॥ ३२५॥
खेत रनथंभ के हमीर रन-धीर बली,
सेना पातसाह की कृपान-मुख मारी है।
लुत्थन पै लूत्थ परे घायल बलुत्थ परे,
हत्थ कहूँ मत्थ खात आमिष-अहारी है॥
लोहू के अलेल मैं गलेल देत भूत भिरैं,
रुंडन कों प्रेत औ पिसाच सहचारी है।
तारी देत कालिका किलकि किलकारी दैकै,
भारी मुंडमालिका महेस उर डारी है॥३२६॥
लरे पातसाह औ हमीर रनथंभ-खेत,
वीरता बखाने कौन सुभट अरे जे हैं।
हाँकि-हाँकि दलनि दबाइ दहपट्टि हते,
वाजी औ बितुंड-झुंड झूमत खरे जे हैं॥
मारे रन मुगल पछारे पीरजादे,
अधफारे फर लोटत पठान वे लरे जे हैं।
पार भए नेजे भूमि भूमि मैं परे जे,
करे टूक-टूक रेजे सरे रेजे से करेजे हैं॥३२७॥

(सवैया)

वीर हमीर इतै रनधीर लरै उत सों सुलतान सु हेलैं।
मार परी तरवारनि की बरसैं सर सूल भयंकर सेलैं॥
लोह कटे कुलही तनत्रान मची घमसान भए दल भेलैं।
लोह अघायल ह्वै रहे हायल घूमत घायल फाग-सी खेलैं॥३२८॥

(छप्पय)

बिषम चली तरवारि, मार धुनि मारु-मारु धुनि।
मढ़्यो सोर यह घोर, परत नहिं और बात सुनि॥
जुत्थ-जुत्थ कटि परैं, लुत्थ पर लुत्थ उलत्थिय।
कुंडनि श्रोनित भरे, सुंड बिन डोलत हत्थिय॥
असवार बिगत बाहन फिरैं, भिरैं भूत भैरव बिकट।
नोचैं गिरीस गिरिजा-सहित, रंगभूमि रुंडनि निकट॥३२९॥
भयो घोर घमसान, रोर दसहूँ दिसि माची।
डहडह वज्जै डमरु, जूह जुग्गिनि जुरि नाची॥
भ्रमत भूत जमदूत, बीर बैताल वहक्कैं।
ताल देत भैरव पिसाच, मिलि प्रेत डहक्कैं॥
कर गहि कपाल पीवै रुधिर, कंकाली कौतुक करै।
गन-सहित रुद्र जाग्यो समर, लाग्यो घर मुंडन भरै॥३३०॥
चुंचन चुत्थैं गिद्ध, माँस जंबुक मिलि भच्छैं।
चाटैं चरवि पिसाच, प्रेत गहि हाड़ प्रतच्छैं॥
भषैं मोद भरि भूत, रुंड भैरव लै भज्जैं।
गहि कपाल रत्त, पान करत चंडी गलगज्जैं॥
नाचैं निहारि जुरि जोगिनी, सुभट जच्छ-कन्या बरैं।
रनभुम्मि भए कायर बिमुख, सूर समर साका करैं॥३३१॥

(दोहा)

भयो जुद्ध दिन सात लौं, रात-दिवस इक सार।
रुंड-मुंड परि खेत मैं, परगट भयो पहार॥३३२॥
कढ़ी कुटिल गति कोटि तें, श्रोनित-सरित अपार।
मज्जन फ़रत पिशाच-गन, रुद्र सहित-परिवार॥३३३॥

(भुजंगप्रयात)

परे मत्त दंती मरे सुंड-खंडे।
उभै ओर ते कूल राजैं प्रचंडे॥
वहै लाल लोहू लसै वारि-धारा।
मनौ कौल फूले कलंगी अपारा॥३३४॥
परे अंग-भंगं तुरंगं अनेकं।
तिरैं ग्राह मानो गहे एक-एकं॥
फटे रुंड-मुंडं कटे केस छूटे।
मनो पाज कों पाय सेवाल जूटे*॥३३५॥
परे खग्ग खंडा प्रचंडा दुधारे।
फिरैं धार मैं ज्यों महा ब्याल कारे॥
तनंत्रान फूटे फटे टोप ढालं।
परे नीर मैं ज्यों महा जंत्र-जालं॥३३६॥
वहै वस्त्र फेनं फँसे अत्र मीनं।
महा मक्र-से सूर-सावंत पीनं॥
चली जोर वेगं महा घोर धारा।
गिरे गर्व-वृच्छं प्रतच्छं अपारा॥३३७॥
लसैं भौंर-से भीम हैं चक्र जा मैं।
कलथ्यंत सूरं तरंग ललामैं॥
करैं केलि काली कपाली समेतं।
करैं पान केते तृषावंत प्रेतं॥३३८॥
भिरें भूत भैरो भरे गात धोवैं।
कलोलैं तिरैं जोगिनी ताप खोवैं॥

* इसके चौथे चरण में 'पाज' के स्थान पर यदि 'पाँक' पाठ कर दिया जाय तो स्पष्ट हो जाय।

परैं गीध आकास तें आनि टूटे।
बिना सोक कोकावली हंस जूटे ॥३३९॥*
महा भीम भारी नदी यों गँभीरं।
करी जुद्ध मैं वीर हम्मीर धीरं॥
तहाँ कोप कै साह आलाउद्दीनं।
गही हाथ कम्मान औ बान लीनं ॥३४०॥

(छप्पय)

गहि कमान सर तानि, साह आलाउद्दीन इमि।
करै बान-बरषा अपार, सर वारि-धार-जिमि॥
गिरैं वीर रन-धीर, भिरैं सनमुख दल दोऊ।
पीछे देत न पाँव, फेरि फिरि सकत न काऊ॥
मोडैं न बाग छोडैं न छिति, अड़ि धांड़े जड़-गति रहे।
श्रोनित अन्हाय हायल सुभट, तन घायल जकि थकि रहे ॥३४१॥

(दोहा)

भूरि सूर करना करैं, टरैं न तजि रन-खेत।
सात दिवस संगर भयो, निस-दिन रहा न चेत ॥ ३४२ ॥

(सोरठा)

बरषत सर सुलतान, विकल देखि दल आपनः।
गहि कृपान चहुँआन, पर्‍यो मृगन मैं सिंह ज्यौं ॥३४३॥
नागन कों खगराज, बाज बटेरनि ज्यों हनै।
त्यों हमीर गजराज, हन्यो साह-दल आप ही ॥३४४॥

---

* इस चौपाई की दूसरी तुक लेखक ने छोड़ दी थी, सो पूरी कर दी गई है।

(मोतीदाम)

गही करवाल हमीर हँकारि।
दलं दहपट्ट दियो महि डारि ॥
करी जुग खंड विहंडि-विहंडि।
दियो जमदूतन को जनु वंडि ॥३४५॥
करैं रन रंग तुरंगनि अंग।
चरै मनु केहरि कोपि कुरंग ॥
परे रन सूर कलत्थ-कलत्थ।
कहूँ धड़ मत्थ कहूँ पग हत्थ ॥३४६॥
फिरैं रन घूमत घायल सूर।
अघायल स्रोनित चायल चूर ॥
कटे तनत्रान फटे सिर-टोप।
लटे रिपु-रंग मिटी मुख-ओप ॥३४७॥
लगे रन धावन मुंड अपार।
वही पुनि दारुन स्रोनित-धार ॥
उठे अति कोप कबंध उदार।
भई यह भूमि भयंकर मार ॥३४८॥
जहीं चहुँआन गही समसेर।
दिए सब सत्रुन के मुख फेर ॥
चढ़े गज भाजत फौज निहारि।
तहीं सुलतान गयो हिय हारि ॥३४९॥

(दोहा)

भाग्यो दल सुलतान को, जोर पर्‌यो चहुँआन।
हाँकि-हाँकि मारन लगे, धीर बीर बलवान ॥३५०॥

(छप्पय)

भयो जुद्ध अति घोर, राम-रावन रन जुज्झे।
पुनि पारथ अरु करन, कोपि कुरुखेत अरुज्झे॥
लर्यो भीम गहि गदा, गाजि दूरयोधन मार्यो।
पुहुमि राय सो जुद्ध, काल चहुँआन सँहार्यो॥
सुलतान गरब गंज्यो समर, तिमि हमीर सूरन सजे।
निरतंत रुद्र नारद निरखि, डिमि-डिमि-डिमि डमरू बजे ३५१

(सोरठा)

भयो घोर घमसान, परे खेत सिगरे सुभट।
दल सब आयो काम, रहे नषत-ज्यों भोर के॥३५२॥
दल-बल सान गँवाइ, दै हमीर कों सुजस वर।
भग्यो साह सिर नाइ, पील-चढ्यो जित तित लखत।३५३।

(चौपाई)

भागी सेन साह की ऐसें। बधिक-जाल तें पच्छी जैसें॥
सूखे अधर बदन कुम्हिलाने। खोई सान सकल सनमाने॥३५४
झुके सीस सब सस्तर डारे। परत न पग मग मैं मन मारे॥
भयो साह तन-बदन मलीनो। ज्यों रबि उदै चंद द्युतिहीनो॥
जब हमीर नृप जीत्यो जंग। सूरनि चढ्यो चौगुनो रंग॥
बढ़ि-बढ़ि बहकि बीर चहुँआन। छीन साह के लिए निसान॥
जूझे सूर-बीर रनधीर। पाई फते राय हम्मीर॥
राय खेत जब झारन लागे। झुके निसान गए बढ़ि आगे॥
होनहार भावी बलवंत। विधि केहूँ कों न पायो अंत॥
तुरतै आइ महल तें बूझी। दई सुनाय अतिहि अनसूझी॥३५८॥
झुके निसान कोट-दिसि आवैं। और न काऊ संग लखावैं॥

सुनि सबहिन बिचार यह कीन्यौ। रन मैं महाराज जस लीन्यौ ॥
रन तें मुड़यो न छत्री आन। गढ़-दिसि आवत मुड़े निसान ॥
अब रिपु फते खेत मैं पाई। लैहै लूटि कोट वरिआई ॥ ३६० ॥
यातें हुकुम भूप कर जौन। आज उचित करियो है तौन ॥
यह विचार सब रानिन कीन्ह। करि असनान दान बहु दीन्ह ॥

(दोहा)

ह्वै पवित्र नृप-वचन गुनि, सब रानिन रनिवास।
विन कारन जौहर भयो, विधि-अनरथ-परकास ॥३६२॥
होनहार सो ह्वै रह्यो, विन कारन बिन जोग।
जैसे या रनथंभ को, जौहर को उपयोग ॥३६३॥
छुरी--खंड अरु खंग लै, मरीं कटारी खाय।
कंतिक दारू मैं जरीं, दारू जोर विछाय ॥३६४॥
एकै साहस मैं भरीं, परीं कूप मैं दौरि।
कोऊ गिरि गिरि गेह मैं, मरीं आप सिर फोरि ॥३६५॥
दस हजार जौहर भयो, छिन मैं लगी न बेरि।
तब उलट्यो रनथंभगढ़, नृप हमीर दल फेरि ॥३६६॥
जीति जंग सुलतान सों, चढ़यो रंग चहुँआन।
भरि उमंग आवत चल्यो, गहगह बजत निसान ॥३६७॥
आवत भूप उमग भरि, सुन्यो कुलाहल कान।
पूछ्यो तब काहू कह्यो, सब विरतंत बखान ॥३६८॥
दस सहस्र जौहर भए, सुनि हमीर चहुँआन।
सुनि सँदेस—'आवत चले, गढ़-दिसि झुके निसान' ॥३६९

(चौपाई)

सुन्यो स्रवन मैं जौहर होन। छन इक रह्यो भूप गहि मौन ॥
पुनि बिचार मन मैं ठहरायो। विधि-परपंच न परत लखायो

कीन्यो करत करैगो सोई। यह विधि-चरित न जानत कोई॥
विधि बलवान जगत सब मानौ। विधि-वस सकल सुरासुर जानौ
जो विधि चहै करैहै सोई। मेटनहार और नहिं कोई॥
जो चाही कीन्हीं विधि तौन। हरष सोक यामैं कहु कौन ३७२
होनहार सो टरै न टारं। सिव श्रीपति विरंचि पचि हारं॥
कोटि उपाय करैं किन कोई। अरबस होनहार सो होई॥३७३॥

(कवित्त)

भावी वस भूमि जल पावक अकास पौन,
भावी हरतार करतार प्रभु लेखिए।
भावी-वस अंगिरा वसिष्ट मुनि नारद औ,
सनक सनंदन सनातन विसेखिए॥
भावी-वस सेस औ सुरेस औ वरुन जम,
काल ससि सूरज असुर अवरेखिए।
भावी चहै जोई सोई करै औ करावै जग,
भावी-वस ईस औ अनंत विधि देखिए॥ ३७४॥

(दोहा)

गावत गुन आगम निगम, निसि-दिन लहत न अंत।
तीन काल जुग चार मैं, है भावी बलवंत॥३७५॥
हानि-लाभ जीवन-मरन, चर अरु अचर समान।
विधि-प्रपंच परगट जगत, भावी–वस सब जान॥३७६॥
है हरता करतार प्रभु, कारन–करन अखेद।
यह विचारि चहुँआन के, मन उपज्यौ निरबेद॥३७७॥
समर जीत जौहर सदन, सब ईस्वर परपंच।
कीन्ह्यो यह निरधार मन, हरष सोक नहिं रंच॥३७८॥

झूठो जग बस और के, स्ववस बात नहिं एक।
निहचै करि हम्मीर नृप, बोले सहित-विवेक ॥३७६॥

हम्मीरदेवोवाच—

(चौपाई)

सब मिलि सुनौ बात दै कान। है मेरो यह वचन प्रमान ॥
मै रिपु-भंग जंग मैं कीन्यो। सुजस राखि सरनागत लीन्यो।
समर जीति सब सत्रु भगाए। सुजस समेत लौटि गढ़ आए।
इन सबहिन मिलि तजे परान। मेरो वचन न दीन्यो जान
समर जीति जौहर को होन। जो अहचरज भयो यह तौन ॥
अब विलोकि मेरे मन आई। है प्रधान ईस्वर सब ठाई ॥३८२॥
जग मैं लह्यो सुजस बहुतेरो। गयो गेह छिन मैं मिटि मेरो।
उभै तमासे नैननि जोहि। उपज्यो तत्व-ज्ञान अब मोहि ॥३८३
यह जग इंद्रजाल सम जानौ। करनहार नट-सरिस बखानौ ॥
छिन मैं करत और को और। देखि न परै रहै सब ठौर ॥३८४॥
कारन-करन आप सब जोई। सिरजनहार जगत को सोई ॥
ताकी सरन आज मैं जैहौं। राजभार सुत के सिर दैहौं ॥३८५॥

(दोहा)

जाहि जानि रन मैं मर्‌यो, जर्‌यो सकल परिवार।
छिन भर उचित न जीवनो, ताकों इहि संसार ॥३८६॥

(कवित्त)

दान दीने द्विजनि दरिद्र करि दूरि भूरि,
दंड दीने खलन प्रचंडनि उताल मैं।
हार दीनो अरिन विडारि तरवारि मुख,
न्याय दीनं सकल निपाटि सुनि हाल मैं ॥

तात मात सुंदरि सकल परिवार सुख,
दीने मैं हमीर हठधारी सब काल मैं ॥
राज दैहौं सुत कों समाज सब साज आज,
सीस दैहौं अरपि गिरीसजू की माल मैं ॥३८७॥
राज सिर सुत के समाज सिर काज-भार,
देत मैं न अरत विषाद नेक मन मैं।
सोधि-साधि सर्वहिं प्रबोधि कै प्रसग कहै,
बाध देत घटत उछाह सब तन मैं ॥
चक्कवै हमीर धीर धरम-धुजा की धुजा,
सीस देत ईस कों छितीस एक छन मैं।
रौर परी दोष अकुलाने अलकेस,
लगीं सोर करैं सुंदरी सुरेस के सदन मैं ॥३८८॥

(सवैया)

साजिकै राज को साज सबै सुत के सिर आप दियो करि टीको।
गंग के नीर कियो असनान दियो बहु दान दुजातिन ही को ॥
लै अपने कर मैं करवाल नरेस हमीर हठी अति नीको।
काटि दियो सिर ईस के हाथ भयो सुरलोक मैं नाथ सची को ॥
सीस चढ़ाय दयौं नरनाथ हमीर हठी जग जानत सारे।
देवबधू बरषैं बर फूल बजैं नभ नौबत ढोल नगारे॥
जात बिमान चढ्यो चहुँआन दुरैं सिर चौंर चहूँ दिसि भारे।
आनि गहो उठि श्रीपति बाँह भए हरि-सेवक सेवनहारे ॥३९०॥

(दोहा)

जीवत अरि-दल दलमल्यो, मरि लीन्यो हरिधाम।
धन हमीर छिति छत्रपति, अमर तिहारो नाम ॥ ३९१ ॥

(कवित्त)

माने देव दुज मनमाने साधु संत हित-,
सहित पिछाने सुखसाने वाम धाम को।
लाले सुत-बाले प्रतिपाले या पुहुमि पर,
घाले मुख काले कै निकाले चोर चाम को॥
लीने जग सुजस हमीर करि साके वीर,
कीने लोक अमर जसीले निज नाम को।
मारे अरि समर सुरेस-दुख टारे आज,
फारि रविमंडल सिधारे सुर-धाम को॥३६२॥

(दोहा) *

को या धरती मैं भयो, तुव समान चहुँआन।
अरि मार्‍यो तन परिहर्‍यो, वचन न दीन्यो जान॥३६४॥
बलि-बावन कुंती-करन, ज्यों नृप सिवी-कपोत।
त्यों हमीर औ मीर को, कलि मैं सुजस-उदोत॥३६५॥
छत्रिन के कुल को भयो, छिति पर भानु हमीर।
कियो सुजस परताप सों, जगत-उज्यारो बीर॥३६६॥
बहुरि गयो बैकुंठ को, नृप हमीर चहुँआन।
कियो राज ताको तनय, जानत सकल जहान॥३६७॥
यह हमीर को रायसो, चित्र लिख्यो लखि सार।
छंदबंद 'सेखर' कियो, निज मति के अनुसार॥३६८॥
महाराज के हुकुम तें, सिद्ध होत सब काज।
भयो ग्रंथ जिनकी कृपा, परिपूरन सुभ आज॥३६९॥

* यहाँ का एक दोहा छूट गया है।

२ ० ६ १
कर नभ रस अरु आतमा, संवत फागुन मास।
कृस्नपच्छ तिथि चौथ रवि, जेहि दिन ग्रंथ-प्रकास ॥४००॥
राधावर, कै जगत मैं, श्रीनरेंद्र मृगराज।
'सेखर' को प्रभु लोक मति, दूजो लखत न आज ॥४०१॥
मोहिं भरोसो रावरो, महाराज सिरमौर।
करो कृपा द्विज दीन पै, निरखि आपनी ओर ॥४०२॥
जौ लौं ससि-सूरज रहैं, सुरपुर सक्र-समाज।
चिरंजीव तब लौं रहो, श्रीनरेंद्र मृगराज ॥४०३॥

॥ इति श्रीहम्मीरहठ चंद्रशेखर कवि कृत संपूर्णम् ॥

शुभंभूयात्।

१६०२

टिप्पणियाँ

१—गिरिवरधर = श्रीकृष्ण। गंगधर = महादेव।

सूचना—दोहा एक अर्धसम मात्रिक छंद है, इसके प्रथम एवं तृतीय चरणों में १३-१३, दूसरे एवं चौथे चरणों में ११-११ मात्राएँ होती हैं। अंत में 'गुरु-लघु' रखते हैं।

२—परसराम = परशुराम। अहि-फन = शेष के मस्तक पर। जिमि पत्र = पत्ते के समान, हलके रूप में। मृगराज = सिंह। तव = तुम्हारा।

३—मृगपति = सिंह।

४—बोलि = बुलाकर। छंद-बंद = छंदोबद्ध। सोहावनि = अच्छी लगनेवाली।

५—जिहि...चरित्र—चित्र में जैसे चरित्र लिखे थे। भाषा करी = भाषा में रचना की।

६—जहान = संसार।

७—रायसो = वृत्तांत, वर्णन (युद्ध)। विधि = प्रकार। निरधारि = निश्चित कीजिए (समझिए)।

८—दीनपति = दीनों का पालक। तखत-नसीन = सिंहासनासीन। दूजो = दूसरे। तपै = तपता है, अपना प्रताप चारों ओर फैलाता है।

९—मेदिनी = पृथ्वी। झंपै = ढक जाता है। सहज = स्वभावतः।

१०—दल बल = सेना। बंक = टेढ़ी दृष्टि से। राव = राजा। रंक = गरीब।

११—हजूर = सामने। हरमैं = बेगमें। खवास = दास-दासियाँ।

१२—वैस=(वयस्) उम्र। मदन=कामदेव। तरकि=विचार करके। पातसाह=बादशाह। चाय=चाव। चायल=चाव से। कलाधर=चंद्रमा।

सूचना—मनहरण कवित्त वर्णिक दंडक है। इसके प्रत्येक चरण में १६ और १५ अक्षरों के विराम से ३१ अक्षर होते हैं। अंत में कम से कम एक गुरु वर्ण होता है।

१३—आलिजाह=(अरबी) ऊँचे दर्जे का, हे शाहंशाह। अरजैं=विनय।

सूचना—सोरठा एक अर्धसम मात्रिक छंद है। इसके विषम चरणों में ११-११ और सम चरणों में १३-१३ मात्राएँ होती हैं। विषम चरणों में तुकांत मिलता है, जिसके अंत में गुरु-लघु होता है। दोहे का उल्टा सोरठा होता है।

१४—वरु=श्रेष्ठ। भोर=प्रातःकाल, दूसरे दिन।

१५—कानन=वन, जंगल।

१६—तुरंग=घोड़ा। कुल्लह=शिकारी घोड़े। समुद=(समुद्रह) बढ़िया, सवारी करने योग्य घोड़ा। कुमैत=(तुर्की-कुमेत) स्याही लिए लाल रंग का घोड़ा। सुरंगा=नारंगी रंग का घोड़ा।

सूचना—चौपाई एक सम मात्रिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं। अंत में प्रायः दो गुरु वर्ण रखे जाते हैं। पहले-दूसरे एवं तीसरे-चौथे चरणों में तुकांत मिलता है। कहीं-कहीं पंद्रह मात्राएँ होती हैं। अंत में गुरु-लघु या लघु-गुरु होता है, तो उसे चौपई कहते हैं।

१७—अमित=अगणित। रंग=आनंद। को=कौन। औरै=और प्रकार का, विचित्र। कुरंग=मृग। ठौर=स्थान। जरदाजी=सुनहली। ओजी=ओज से भरी हुई।

१८—साखत=समर्थन करते हैं, प्रमाणित करते हैं। पेसबंद=

(फा० पेशबंद) चारजामे में लगा हुआ दोहरा बंधन जो घोड़े की गर्दन पर से लाकर दूसरी ओर बाँध दिया जाता है, जिससे चारजामा घोड़े को दुम की ओर न खिसक सके। पूँजी = धन, मूल्य। हैकलैं = (हय + गल) घोड़े के गले का एक गहना। सड़क = बागडोर, रास। सेत = उज्ज्वल। गजगाहैं = झूल। यालनि = (तु० याल) घोड़े की गर्दन पर के बाल, अयाल।

१६--बरजोर = बली। बखाने = प्रशंसित। ढिग आने = पास ले आए।

२०--खुले थान तें = अस्तबल से खुलने पर। जोम = उत्साह। उकंदत = उछलते हुए। जमत = जमते हुए। तुरी = घोड़े। मतंग = हाथी। हुंकरत = हुंकार करते हैं। हींसत = हिनहिनाते हैं। फबत = शोभित होते हैं। फुंकरत = फुफकारते हैं। फर-मंडल = (रण-क्षेत्र। मँझार = मध्य। दीरघ = भारी। दलत हैं = नष्ट करते हैं।

२१--सूर = वीर। कमान = धनुष।

२२--सिगरी = सब। ते = वे। पट = वस्त्र। दामिनी = बिजली। जेब = (फारसी) शोभा। जड़ाव = रत्नजटित। उमंग = उत्साह। फोरि = चीरकर।

सूचना-मत्तगयंद सवैया के प्रत्येक चरण में सात भगण (ऽ।।) और दो गुरु होते हैं।

२३--विमला = सरस्वती। बाजि = घोड़ा। बलित = युक्त। बैनी = चोटी। जरी = जटित। हेम = सोना। पैनी = तीखी। जौनी = जिस। बीथी = गली। तौनी = उस।

२४--आखेट = शिकार। अरण्य = वन। तुरंग = घोड़े। पौन = पवन, वायु। गौन = गमन। बाज = शिकारी पक्षी। बैस = अवस्था। पीखे = (सं० पीठ = स्थान) युक्त। संसेर = तलवार। नेजे = भाले। कानै = कानों से।

सूचना—झूलना के प्रत्येक चरण में चार-चार यगण के विश्राम से ८ यगण (।ऽऽ) होते हैं। कवि ने इसे 'झूलना' लिखा है, पर वस्तुतः यह महाभुजंगप्रयात कहलाता है।

२५—पूर = घाव। छोटैं = छोटा ही। ओटैं = आड़ में। जम्मराजा = यमराज। धूम = धुआँ। घोटैं = घूँटते हैं।

२६—झारखंड = उड़ीसा। माहताब = चंद्रमा। जुन्हाई = चाँदनी। जोबन-तरंग = यौवन का उल्लास। सरस = बढ़कर। अभिराम = सुंदर। या कराह = यह आह। अमित = अत्यंत। अनग = कामदेव।

२७—गात = शरीर। चटपटी = आकुलता। अटपटी = अंडबंड। लात = पैर। जात बनत न लात के = पैरों से जाते नहीं बनता। कुलंग = उछाल। साःसीक = (साहसिक) हिम्मतवर। मातके = पराजित करके। तातो करि = तीव्र करके। ताजन दै = बढ़ावा देकर। फफकि = फर्र से।

२८—निदान = अंत में। तान = तानकर, खींचकर। मीत = मित्र। नेक = थोड़ी। सरसाय = बढ़ाकर।

२९—बावरी = (सं० वातुल) पगली। पतसाह = (पादशाह) बादशाह। अनैसी = अनिष्टकारिणी।

३०—अडोल = अटल, अकाट्य।

३१—उदास = दुखी। जीवन-आस = जीने की आशा।

३२—बाम = स्त्री। अंक = गोद। मोट = गठरी। निधि = खजाना। रंक = गरीब।

३३—रस-विवस = आनंद में मग्न। वैर = स्थान।

३४—पास = जाल। चीर = वस्त्र। सँघारयो = मार डाला।

३५—मनमाने = मनमानी, मनचाही। जाम-घरी = एक प्रहर।

वसन = वस्त्र । रूपभरी = सुंदरी (बेगम)। रति-पति = कामदेव। सस्तर = शस्त्र। हय = घोड़ा। मीतैं = मित्र, यार। भामिनि = स्त्री।

सूचना—त्रिभंगी ३२ मात्राओं का मात्रिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में १०, ८, ८, ६ पर विश्राम होते हैं। अंत में दो गुरु वर्ण रहते हैं।

३६—नट्टी = नारी। वाग = घोड़े की डोर। वाग पलट्टा = घोड़ा मोड़ा। कौतुकचारी = क्रीड़ा करनेवाली। मग डारे = रास्ते में ही छोड़ दिए। चाप = धनुष। धूम = धूमधाम। कलोलैं = खेल।

३७—ललामैं = रमणीक। खुस्याल = प्रसन्न। करोरि = करोड़ों। कलामैं = बातें। गला मैं = गले से लगाकर। ममारखी = बधाई। वारहि वार = वारंवार।

३८—सिगरी = सब। सब ओर = चारो तरफ। सेज = शय्या। बीन = वीणा। तास = ताश (खेलनेवाला)। कंत = स्वामी। दिमाग सवाई = बढ़े-चढ़े दिमागवाला।

३६—सहित-अदाय = आदाब के साथ। ढिग = पास। एकै = कोई।

४०—ऐसे = इस प्रकार। वामैं = स्त्रियाँ। अरामैं = आनंद, सुख।

४१—सैन-सदन = शयन-गृह। परवीन = (प्रवीण)। रतिपति = कामदेव।

४२—जोवत = देखते हुए। रस-पागे = आनंद-मग्न। मूषक = चूहा।

४४—खवास = दास। नाज़िर = सरदार। मुबारकी = बधाई।

४५—रूनमुख = सामने हो। मतिहीन = निर्बुद्धि।

४६—बहुरि = फिर । हेत = कारण । परसत पगनि = पैर छूती है ।

४७—हठ परयो = हठ किया। तरेर = आँखें तीव्र कीं । करि = करो । बिहान = कल ।

४८—खोजा = (फा० ख्वाजा) नौकर । भोर = प्रातःकाल । भजि जाय = भाग जाय ।

४६—नाजिर = देख-भाल करनेवाला, सरदार । भाजु = भागो । खलीता = खरीता, लिफाफा ।

५०—थार = आघात, चोट । जोर = प्रबल । जंग = युद्ध । जकत है = युद्ध में जोर से गरजता है । पारावार = समुद्र । जंग...छकत हैं-उसकी सेना का युद्ध देखकर यमराज भी क्षुब्ध होकर छक जाता है । को = कौन ।

५१—सरनें = शरण । अजौं = आज भी । अरने का = अड़ने को, मोर्चा लेने को । दंड भरौ न = कर नहीं देता । हर बार = प्रत्येक बार ।

५२—कोट = चहारदीवारी, परकोटा । अडोल = निश्चल । अबोल = निस्तब्ध ।

५३—पग दियो = पैर रखा । दरवान = द्वारपाल । कित तें = कहाँ से । न पैहो जान = जाने न पाओगे ।

५४—भाषौ = कहलाता हूँ ।

सूचना—भुजंगप्रयात वर्णिक छंद है । इसके प्रत्येक चरण में चार यगण (ISS) होते हैं ।

५५—बानो = बात । दुरे आनि पीछे = उसके पीछे हो लिए । जोहारे = सलाम को । पाहुनें = अतिथि, मेहमान ।

५७—हिंद-धनी = भारत के स्वामी । हिम्मत-धनी = हिम्मतवर । समर = रणक्षेत्र ।

५८--आप-ढिग=अपने पास।

५६--रिसाने=क्रुद्ध हुए। पराने=भागे। थंभन=स्तंभ, खंभा। सरने=शरण में। जाने=जानते हैं।

६०--उवारि लेहि=उद्धार करे। उभै=(उभय) दोनों। गैहैं=गावेंगे।

६१--उमग=उमंग। गात=शरीर। समाना=अँटना।

६२--उवै=उदित हो। वरु=चाहे। गौरि=पार्वती। अरधंग=(अर्धांग) महादेव का वाम अंग। सुरतरु=कल्पवृक्ष। लोमस=एक दीर्घजीवी मुनि। मीर=महिमा-मंगोल। वहुरां=फिर से।

सूचना—छप्पय हिंदी का विषम छंद है जो रोला और उल्लाला के योग से बनता है। चार चरण रोला (प्रत्येक चरण में ११ और १३ के विराम से २४ मात्राएँ और अंत में चौकल SS, IIS, SII—गुरु लघु नहीं) और दो दल में उल्लाला (पहिले-तीसरे चरणों में १५ और दूसरे-चौथे चरणों में १३ मात्राएँ, अंत में त्रिकल III, IS—गुरु-लघु नहीं)।

६३--खसैं=गिर पड़े। झंपै=छिप जाय। अचल अवनि=स्थिर पृथ्वी। संकरषन=शेषनाग। उतल्लै=उतावले होकर। परलै=प्रलय।

६४--मुसाहिव=ओहदेदार सरदार।

६५--लाहू=खून। परि वोलै सिर वोल=रण-क्षेत्र में सिर कटकर गिर पड़े और बोल बोले।

[सिंह-गमन=सिंह का सिंहनी के साथ केलि करना। कदलि=केला। तिरिया=स्त्री। तेल चढ़ना=विवाह का पूर्वभूत एक कृत्य जिसमें दूर्वा से तेल चढ़ाया जाता है।]

६६--अडोल=अटल। रोज=दिन।

सूचना—पद्धरी सोलह मात्राओं का मात्रिक छंद है। इसके अंत में गुरु-लघु होता है।

६७--तौन=वही। तरुनी=मरहठी बेगम। वाम=स्त्री।

६८--खवास=दासियाँ।

६९--बिसेषि=विशेषतया, जोर देकर। प्रवीन=कुशल, चालाक।

७१--हरमैं=बेगमें। गरीबनेवाज=दीनदयालु।

७२—मीर=महिमा-मंगोल। मेरी नजर परथा=मुझे दिखाई पड़ा। मदन=कामदेव। सर=बाण। सँभार=होश-हवास।

७३—तुरंग=घोड़ा। तातो कियो=तेज किया। हुलास=(उल्लास) हर्ष।

७४—कमान=धनुष। संक=आशंका, भय।

७५—या=यह। सूरता=वीरता। अमाप=अपार, अगणित।

७६—विषम=टेढ़े। आमखास=वह स्थान जहाँ बादशाह गुप्त सलाह करते हैं। हजूर=सामने। धाय=दौड़कर, शीघ्रता से।

७७—लेहु अंत=आखिरी दर्जे तक।

७८—कोय=कोई। साहानसाह=शाहंशाह। आलम-निवाज=संसार पर दया करनेवाले।

७९—हिम्मत उदार=बड़ी हिम्मतवाले, अत्यंत साहसी। संग्राम-सिंधु=रण-समुद्र। पनाह=शरण।

८१—गढ़वी गँवार=गढ़ का रहनेवाला मूर्ख। पतंग=फतींगा। पावक=अग्नि। मँझार=मध्य।

८२—दंड=कर। देवलकुमारी=हम्मीरदेव की कन्या।

८३—घाड़े=घुड़सवार। आन=लेकर। पयान=प्रयाण, प्रस्थान।

८४—अस्त्र=फेंककर मारे जानेवाले हथियार, जैसे बाण।

सस्त्र = (शस्त्र) हाथ में लिए-लिए चलाए जानेवाले हथियार, जैसे तलवार। अगंत = आगे, सबसे पहले।

८५--पौरि = द्वार पर। बाजी = घोड़ा। अगार = घर। ड्योढ़ी-अगार = ड्योढ़ी पर का स्थान, जहाँ पर सिपाही रहते हैं।

८६--दरवान = द्वारपाल। वेगि = शीघ्र।

८७--आयसु = आज्ञा।

८८--बरजार = प्रबल।

८९--वदन = मुख। राजन-सिरं = राजाओं में शिरोमणि।

९०--गेह = घर। अग्यान = (अज्ञान) बाल-बच्चे। घनेरं = घने, बहुत से।

९१--तखत-नसीन = सिंहासनासीन। सुख-सानौ = सुखित। बखानौ = कहो।

९२--गुमान = अभिमान। आतंक = रोब।

९३--परिवार = कुटुंब।

९४--पै = पास। आयसु = आज्ञा।

९५--सल्लाह = संधि, मेल। भाजि आयो = भाग आया। आपने = स्वयं बादशाह ने। हूनी = (हूण) उजड्ड। कुंवारि = कुमारी, अविवाहित। ताईं = (उसके) वास्ते, लिये। नंक मैं = थोड़े में।

९६--वंके = (वक्र) टेढ़े। वंव वजना = लड़ाई होना। फेरं = बार, दफे। डोला = देवलकुमारी का डोला।

९७--सावंत = सरदार। प्यादे = पैदल। गाजी = धर्मवीर। सारो = सब। मही = पृथ्वी। सुरेंस = इंद्र।

९८--झकाझोर = तेजी से। संसेर = तलवार। रुंड = धड़। बहे = बहने से।

९९--नीको = अच्छा। गुनौ = समझो। मीच = मृत्यु। ताव = शक्ति, सामर्थ्य।

१००—काढ़ी = निकालो। दीन मुहम्मद = मुसलमानी धर्म। खीन = क्षीण।

१०१—मतग = हाथी। सत सहस = सौ हजार। अनुसरु = करो। पतंग = फतींगा। जंग = युद्ध।

१०२—अपलोक = बदनामी। वध = मारना। दैव = विधाता, भाग्य।

१०३-गाजी = धर्मयुद्ध-वीर। सहीस = साईस। निजु = निश्चय। बाजी = घोड़ा। चक्कवै = चक्रवर्ती। सिर-ताजी = मुकुट। रन-साजी = रणयुद्ध।

१०६—बिरतंत = (वृत्तांत) समाचार। अरज करत = विनय करता है।

१०७—आलम = संसार। आलम-निवाज = संसार के रक्षक। सिरताज = शिरोमणि। गाज = बिजली। दराज = बड़ा, अधिक। कोप = क्रोध। नज़र = दृष्टि। अतंक = भय, आतंक। गढ़धारी = किलेदार।

१०८—राते = लाल। गाढ़ो = भारी, प्रबल। खंभ रापि = खुल्लमखुल्ला, दृढ़ता के साथ।

१०६—खैर = कुशल। आप = अपने। कोटि = करोड़।

११०—ओप = चमक। सँवारि = सँवारो, सजाओ। बकसो = देदो। हयवर = श्रेष्ठ घोड़े। मतंग = हाथी। कूच आरंभ का करिय = प्रस्थान करो।

१११—सुमुख = भड़कीले चेहरेवाले। समर-अनुरत्त = युद्ध में जिनका अनुराग था।

११२—चलाँके = चतुर। बाँके = टेढ़े। बंकता = टेढ़ाई। करि = हाथी। तंग = बंद। असीले = असल। हेम = सोना। रजीले = धूल से भरे। गुन-आगर = गुणी। माखैं = रुष्ट होते हैं।

उमंग अंग = अंग में उमंग के साथ। ताजी = (अरब का) घोड़ा। तेजलच्छी = तेज लक्षणवाले, तीव्र। पौन-पच्छी = वायु रूपी पक्षी की तरह। कच्छी = व"लें। सुलच्छी = सुंदर लक्षणवाले।

११३—कद = आकार, डीलडौल। भीम = भारी। दीरघ = विशाल दँतारे = दाँतवाले। जलधर = बादल। फुहारैं = फुफकारी मारकर जल की धारा फेंकते हैं। उद्‌ड = उच्छृंखल। सुंडादंडनि = सूँड। कुंड = तालाब। सलिल = जल। पग = पैर। मग = (मार्ग) रास्ता। धरनि = पृथ्वी। धुजावैं = हिला देते हैं। अतोल = अपरिमाण, बहुत। बलधारे = बलवाले। पीलवान = हाथीवान।

११४—जरीदार = कामदार। वन्नात = एक कपड़ा। झूल = हाथी के ऊपर पड़ा कपड़ा। झंपै = ढकी है। सिरीचंद = श्रीचंदन। ढंपै = ढँपा है, सजा है। अँवारो = हाथी के हौदे पर बनी हुई खिड़की-दार कोठरी। हेम = सोना। मंडपी = छोटा मंडप, देवस्थान के आगे बनी बारहदरी या दालान। भानु कैसो = सूर्य की सी।

११५—कुंडी = सिर पर की लोहे की टोपी। कौच = कवच। झिलिम्मैं = कवच। घटाटाप = बहुत बड़ी। पेटी = कसने के बंद। अभंगं = अखंड।

११६—खग्ग = खड्ग, तलवार। खंडा = खाँड़ा। सेल = एक प्रकार की बरछी। नेजा = भाला। तूनीर = तरकस। पूरे = भरे हुए। सूरे = वीर।

११७—जुझाऊ = युद्ध के बाजे। राग मारू = युद्ध के गीत। रंग = जोश, उत्साह। क्रूर = दुष्ट।

११८—धवल = उज्ज्वल, उत्तम। लीन = लिप्त। पायक = पैदल।

११९—चतुरंग = चतुरंगिणी सेना। रंग ह्वै = उत्साहित होकर। अरजत है = विनय करता है। धाराधर = बादल। पेल = भीड़।

गैल = गली, मार्ग। अड़ैल = अड़ियल, रुक जानेवाला। तरजना = गर्जना, चिल्लाना। धूजत = हिलते हैं। फनीस = शेषनाग। लरजत है = काँपता है।

१२०--तज्जत = तरजते है, चिल्लाते हैं। गलगज्जत = चिग्घाड़ते हैं। गयंद = गजेंद्र, श्रेष्ठ हाथी। दराज = भारी। धुक्कत = हिलती है। मद मुक्कत = मद छोड़ देते हैं, गर्व भूल जाते हैं। सुक्कत = सूखा जाता है। पुहुमि = पृथ्वी। झंपत = छिप जाता है। ंपत = चप जाती है, दब जाती।

सूचना--कृपाण छंद में आठ-आठ अक्षरों के विश्राम से प्रत्येक चरण में ३२ अक्षर होते हैं, अंत में गुरु-लघु होता है।

१२१--छार = धूल। खुर-धार = खुर की चोट। तायल = उतावले। तुरंगम = घोड़े। विलंद = ऊँचे। मदंध = मतवाले। दिगदंती = दिग्गज। गाज = बिजली। छैल = युवक।

१२३—बिरद्द = प्रशंसा। गलगाजे = गरजने लगे। चपल = चंचल।

१२४--कटक = सेना। पावस = वर्षा।

१२६--रुख = अनुकूलता। पातसाह........समुदाय—सेना बादल के समान है और बादशाह का इशारा वायु की अनुकूलता है।

१२८—प्रहार = चोट। भटभेरा = मुठभेड़। नेरा = निकट से।

१२९—सुरुख = सुंदर रंग का। चाँदनी = चँदोआ।

१३१—गहगह = तेजी से।

१३३—नियराय = निकट आता (देखकर)। तुपक = छोटी तोप।

१३९—साँप छछूँदर की गति = सर्प छछूँदर को चूहे के धोखे पकड़ लेता है, पर उसे न तो खा ही सकता है न छोड़ ही सकता है। खाने से वह मर जाता है उगलने से अंधा हो जाता है।

१४०--विग्रह = युद्ध। फरमान = आज्ञा देना।

१४३--अनंत = शेषनाग ।

१४४—सुचि = पवित्र, उचित ।

१४५—अजीत = अजेय ।

१४६--जथारथ = यथार्थ, वास्तविक । दधीचि = एक ऋषि, जिन्होंने इंद्र को वज्र बनाने के लिये अपने शरीर की हड्डी दे दी थी। सिवि = इन्होंने कबूतर को बाज से बचाने के लिये अपने शरीर का सारा माँस तौल दिया था। जगदेव = इनका नाम राजपूताना, गुजरात, मालवा आदि देशों में वीरता और उदारता के लिये प्रसिद्ध है। ये परमार-वंशी कहे जाते हैं। कलि कीरति अमान कै = कलियुग में अत्यंत कीर्ति करके। अकारथ = व्यर्थ।

१४७—सब भावै = सब भाव से, सब प्रकार से। परबी = पर्व, पुण्यकाल।

१४८—घमसान = घोर युद्ध। बितुंड = हाथी। रुंड = धड़। रज = धूल। श्रोनित = शोणित, खून। सूरज-मंडल बेधि = रण में मरे वीर सूर्य-मंडल को वेधकर स्वर्ग पहुँचते हैं।

१५२—जुहारे = प्रणाम किया। उदार = भारी। संगर = युद्ध।

१५५—बलगत = बलबलाते हुए।

१५६—बरियाई = बरबस, जबर्दस्ती।

१५८—गुरदा = (गुर्ज) गदा। चद्दर = चद्दर की बनी तलवार। गंज = बहुत से औजार रखने की खोल। गुबारे = कोई तलवार।

१५६—तुपक = छोटी तोप। जरजाल = (ज्वालाजाल) एक प्रकार की तोप। जमूरे = (फा० जमूरक) एक प्रकार की छोटी तोप। भार = बोझ। तान = छोड़ने के सामान; तीर, गोली आदि। बलपूरे = बल से युक्त।

१६२—धूम-धाम = धुएँ का समूह। धुंधरित = धुँधला। सूझना = दिखाई पड़ना। अरुझै = उलझ जाता है। तोड़े = बंदूकें।

घमंकैं = घम्म घम्म शब्द होता है। धुव = सबसे ऊंचे। धमंकैं = धमकते हैं, शब्द होता है। तड़पै = गरजती है। तड़ित = बिजली।

१६३—फनी = शेष। फुलिंग = स्फुलिंग, अग्निकण। सरसत हैं = फैलते हैं। कतार = पंक्ति। केतुतारे = पुच्छल तारे का। तोपै = ढकती है। अंबर = आसमान। भरसत हैं = (भर्त्सना) छोड़ते हैं।

१६४—वजोर = जोर-सहित, तेजी से। महताब = महतावी, मसाल। रंजक = तोप की वह प्याली जिसमें बारूद रखकर जलाई जाती है। उस बारूद को भी रंजक कहते हैं। तार = तड़प। गुरु = भारी।

१६६—प्याले = तोप के प्याले (बारूदवाले)। दामिनी = बिजली। दमंकैं = चमकती हैं।

१६७—पाखान = (पाषाण) पत्थर। केतिकौ = कितने ही।

१६८—गिराखाना = उलटना, चक्कर काटकर पलटना। परे = घुसे।

१६९—लटे = टूट-फूट गए। टोक = (स्तोक) थोड़ा। कुंडी = लोहे का टोप। तनत्रान = कवच।

१७२—रुचिर = सुंदर। राच्यो रंग = साज सजाया (नाचने का)। सुगंध = सुगंधित। मैनका, मंजुघोषा, रंभा = ये स्वर्ग की अप्सराएँ हैं। ताल = नाचने या गाने में हाथ बजाना। गति = ताल और स्वर के अनुसार अंगों को हिलाना। सात सुर = स, रि, ग, म, प, ध, नि,। तीनि ग्राम = सातों स्वरों का समूह; ये तीन षड्ज, मध्यम और गांधार हैं, इनका नाम नंद्यावर्त, सुभद्र और जीमूत भी है। पायल = पायजेब।

१७३—बारवधू = वेश्या। ताल = मँजीरा। हीनो = कमजोर।

१७४—राग षट = भैरव, कौशिक (मालकोस), हिंडोल, दीपक, श्री और मेघ ये छः राग हैं। तान उनचास = संगीत दामोदर में ४९ प्रकार की तानों का वर्णन है। कोटि = (कूट) ४९ तीनों से ८३०० कूट

तानें निकलती हैं। बट=प्रकार। बार-अंगना=वेश्या। अतंक=भय।

१७५—चलगंत=बकते हैं। दहपट्टौं=नष्ट कर दूँ।

१७८—नटी=वेश्या। ओट=आड़।

१७९—गोसा=धनुष की कोटि। जोई=देखकर। रोदा=प्रत्यंचा। फौंक=तीर का दूसरा किनारा। चाप=धनुष। कसीस भरि=खिँचाव करके।

१८०—गहीली=ग्रहण किए हुए। पट-ओट=वस्त्र की आड़। काम-अबला=रति। लोट=हावभाव। कौंधा=बिजली।

१८१—साबस=शाबाश, साधुवाद।

१८२—मंड्यो=ठाना।

१८८—निरतन=(नृत्य) नाचने। कटा करना=काटना।

१९३—अरध-चंद=एक प्रकार का बाण जिसके अग्रभाग पर चंद्राकार नोक होती है।

१९६—लूक=उल्का। हूक=हूल, पीड़ा। जोहत=देखते हैं। जके-से=चकपकाकर। सुक्कुर=(शुक्र) मंगल। कलाधर=चंद्रमा।

१९७—को=कौन। धार=सेना। खैर=मंगल। खालिक=संसार। खुदाय=ईश्वर। सद्राह को=सन्मार्ग की रक्षा के लिये। फ़नाह=(अ० फ़ना) नाश, मरण।

१९९—अत्र=(अस्त्र) हथियार।

२००—वर=बल या श्रेष्ठ।

२०२—पीर=देवता।

२०५—पाथर=पत्थर।

२०७—कटा=कत्ल, काट। खूटना=कम होना।

२०९—प्रचारि=ललकारकर।

२११—अँगै = सहता है। निदान = अंत में। भय-भीनो = भयभीत।

२१२—चक्र = एक अस्त्र। मोट = बोझ, गठरी। लाडिले पठानी के = पठान। मीन = मछली। दिसि = ओर।

२१३—जादे = पुत्र। सकाना = डरना। बलित = घिरा हुआ। बितुंड = हाथी। महिष = भैंसे। बराह = शूकर।

२१४—थिरे = स्थिर। जार = (जाला) झाड़ियों आदि से घिरा गंदा स्थान। करी = हाथी। खिरे = खिन्न। मुगलद्दल = मुगलों की सेना।

२१५—निसान = बाजे।

२१६—धनी = स्वामी। हद = सीमा, मर्यादा। पति = प्रतिष्ठा।

२१७—हमारा खेत रह्यो = हमने मैदान मारा।

२२०—ब्याज = बहाना।

२२१—हय = घोड़ा। बहारि = फिर।

२२२—सिरे = श्रेष्ठ। साल = शल्य।

२२३—निसान = झंडे।

२२५—सिरोपाव = वस्त्राभरण।

२२६—दारू = बारूद।

२३१—ध्रुव = निश्चय। कूट = शिखर। दंड = घड़ी। बिहंडि डार्यो = नष्ट कर दिया। अखंड = समस्त। चंड-वात = प्रचंड वायु। बिहद = बड़े-बड़े। पब्बै = पर्वत।

२३२—तोर = तीव्रता, तेजी।

२३४—फते = विजय।

२३६—सलाहीं = राय। बरियाई = बरबस।

२४०—साविको = सामना।

२४१—जोर पर्यो = बढ़ गया, प्रचंड हो गया।

२४४—त्रंब वजाय=युद्ध का ठान ठानकर ।

२४८—तनत्रान=कवच । झिलिम=लोहे का टोप ।

२५०—तात=पिता ।

२५२—वित=वित्त, धन ।

२५४—उधार=उद्धार ।

२५५—कंकालिनि=मरकुटही । घरघालिनि=घर को कलंकित करनेवाली । नाहर=सिंह ने ।

२५६—छवि-ऐन=छवियुक्त ।

२५७—उमत्थै=मथे, स्नान आदि करे । उलत्थै=छा जाय । काँचो वचन=कच्चो बात, कुल को कलंकित करनेवाली ।

२६०—रुद्र=महादेव । अहि=सर्प ।

२६१—तौर=ढंग । भीर=डर, आशंका ।

२६५—नकीब=वंदीजन ।

२६७—लौन=नमक । एकौ अंक=किसी प्रकार ।

२६८—जार=उपपति ।

२७३—सकति=शक्ति, देवी ।

२७६—तीराँ=तीर, वाण । सेलाँ=भाले ।

२८१—तेगाँ मुक्ख मुवन्न=तू तेग के द्वारा मरे । दीधी=दी । गुवन्न=गावें ।

२८२—जूझै=युद्ध में मरे ।

२८३—तोटक के प्रत्येक चरण में चार सगण (।।ऽ) होते हैं ।

२८४—सार=हथियार । सरसैं=शोभित होते हैं ।

२८५—वरुत्थ=समूह । वलगैं=कोलाहल करते हैं ।

२८७—गनीम=शत्रु । अरुझैं=उलझ जायँ ।

२८८—निसान=झंडे । जौहर=राजपूतों का प्रसिद्ध व्रत जिसमें

पुरुष संकट के समय केसरिया बाना पहनकर युद्धक्षेत्र में लड़ मरते हैं और स्त्रियाँ कोट में जलकर भस्म हो जाती हैं।

२९१--मोतीदाम के प्रत्येक चरण में चार जगण (।ऽ।) होते हैं।

२९२—सजोम=उत्साह सहित। जकंदत=कूदते हुए। करवाल=तलवार।

२९३—झुक्को=लटकती हुई। ओप=कांति।

२९५—मंड=शोभित हैं। कर=किरण।

२९७--गहर=(सं० गह्वर) प्रबल। गनीम=शत्रु। गारव=गौरव। झुकारि=झोंके देकर गिराना, दूर करके।

२९८-धुरवान=धूम के स्तंभ। अत्र=अस्त्र। छनदा=विजली। घुरै=गरजती है। लूकै न=दिखाई नहीं देता।

२९९—निरतैं=नाचते हैं। गाजैं=गरजते हैं।

३००—हत=आहत, चोट खाकर। तरनी=नाव।

३०१—धनाधीस=कुबेर।

३०३--चंपे=दबाने से।

३०४—पायक=पैदल।

३०६—खंडा=खाँड़ा। सक्ति=बरछी। चाप=धनुष। बंके=बाँके। निसंके=निर्भय। जुझारे=लड़ाके।

३०७--बीर बाजे=लड़ाई के बाजे। बाजे=लड़े। जंगै=युद्ध के। उमाहैं=उत्साहित होते हैं।

३०८--मातंग=हाथी। सक्र=इंद्र।

३०९--आनन=मुख। ओप=कांति।

३११—सेखी=गर्व। निनद=आवाज, निनाद। निसान=लड़ाई के बाजे। बाजे=कोई। करसत हैं=खींचते हैं, निकाल लेते हैं। भारथ=महाभारत का युद्ध। पारथ=अर्जुन। भाषम=भीष्म पितामह।

३१२—निदान = अंत में ।

३१३—रंजक = बारूद । जलद = जल्दी, शीघ्र । जामिकी = (जामगी) पलीता । बारि = जलाकर ।

३१५—गहर = (गह्वर) दुर्गम । गराव = एक प्रकार की नाव । नक्र = नौका । भान = सूर्य । मरकत = मरमर शब्द करते हैं । सचोट = चोट-सहित, घायल । बिह्वाल = विह्वल । लरकत = हिलते हैं । रेजा = छोटा टुकड़ा । बिसिष = बाण ।

३१६—छिति = पृथ्वी । दारु = लकड़ी । सिंग = श्रृंग (बाजा) । परसंग = युद्ध-प्रसंग ।

३१८—दाव = दावाग्नि । बिपिन = वन । वितुंड = हाथी ।

३१९—जिह = डोर । खूँटे = कम हो गए ।

३२०—सजोर = बली । सुमार = गणना ।

३२१—सेल = तलवार । बगमेल = मुठभेड़ । आन = अन्य, दूसरा । पारथ = अर्जुन । भारथ = युद्ध । अमान = अपरिमेय, भारी ।

३२२—वितुंड = हाथी । रुंड = धड़ ।

३२३—बिहद = बड़े, भारी । बरुत्थ = समूह । भभकत = खून बहता है । घाइ = घाव ।

३२४—कुंडी = सिर पर की लोहे की टोपी । सनाह = जिरह बख्तर । झिलिम = लोहे की बनी एक प्रकार की झँझरीदार टोपी जो लड़ाई के समय सिर और मुँह पर पहनी जाती है । बरिबंड = बली । रुंड = धड़ । तुंड = हाथी की सूँड । तलफाइ = चोट से पीड़ित हो कर । मसान जगाना = मुर्दे की छाती पर आधीरात के समय बैठकर मंत्र जपना । जंग = युद्ध । उमंग सरसाइ = उमंग बढ़ाकर । हनत = मारते हैं । बिपच्छिन = शत्रुओं को ।

३२५—खेत = (क्षेत्र) रणभूमि । मढ़त तन घाइ = शरीर में घाव होते जाते हैं । अंग = शरीर । सुभट = वीर । तुरंग = घोड़ा ।

चहला = कीचड़ । पाइ = (पाद) पैर । कुंड = तालाब । रुधिर = खून । रुंड = धड़ । रासि = ढेर । भपैं = (भक्ष) खाते हैं । खग = पक्षी । जंबुक = सियार । समुदाइ = समूह । खग्ग वाहत = तलवार चलाता है ।

३२६—लुत्थ = लाश । वरुत्थ = समूह । मत्थ = मस्तक । आमिष = कच्चा माँस । आमिष-अहारी = माँसभोजी । लोह्न के अलेल = खून के कीचड़ में । गलेल देना = किलकारी मारना, क्रीड़ा करना ।

३२७—अरे जे हैं = युद्ध में जो वीर डटे हैं । दलनि = सेनाओं को । दहपट्टि = नष्ट करके, बरबाद करके । हते = मारे । बाजी = घोड़ा । वितुंड = हाथी । पीरजादे = वीरों की संतान । अधफारे = अध-कटे । फर = रणक्षेत्र में । पार भए = एक ओर से दूसरी ओर निकल गए । नंजे = भाले । घूमि = चक्कर खाकर । रंजे = टुकड़े-टुकड़े । सरं रंजे से = सड़े सूत की तरह । करं···करंज हैं = सड़े हुए सूत की तरह कलेजे को काटकर टुकड़े-टुकड़े कर डाला ।

३२८—इतै = इस ओर । उत सों = उधर से । सुहेलैं = लड़ते हैं । सेलैं = एक प्रकार की तलवार । कुलही = लोहे का सिर-टोप । तनत्रान = कवच । मचो घमसान = घोर युद्ध हुआ । भए दल भेलैं = सेनाएं घायल हो गईं । लोहु-अघायल = खून से लथफथ । हायल = बेहोश । फाग = होली ।

३२९—सोर = आवाज । जुत्थ = (यूथ) समूह । लुत्थ = लाश । उलत्थिय = उछलकर गिरते हैं । कुंड = ताल । श्रोनित = (शोणित) खून से । सुंड = सूँड । हत्थिय = हाथी । असवार = घुड़सवार । विगत बाहन = सवारी से रहित । विकट = भयंकर । गिरीस = महादेव । गिरिजा = पार्वती । रंगभूमि = रणभूमि । रुंड = धड़ ।

३३०—घोर घमसान = घोर युद्ध । रोर माची = शोर मचा ।

दिस=दिशा। डहडह=डिम-डिम शब्द करके। जूह=(यूथ) समूह। जुग्गिन=योगिनी। जुरि=एकत्र होकर। वहक्कैं=वड़वड़ शब्द करते हैं। ताल देत=ताली बजाते हैं। दुहक्कैं=दहाड़ मारते हैं। कर=हाथ। कपाल=सिर। कंकाली=प्रेतिनी। कौतुक=खेल। गन=(गण) समूह। रुद्र=महादेव। समर=युद्ध।

३३१—चुंचनि=चोंच से। चुंत्थैं=नोचते हैं। जंबुक=सियार। भच्छैं=खाते हैं। प्रतच्छैं=प्रत्यक्ष ही, आँख के सामने। भषैं=खाते हैं। रुंड=धड़। भज्जैं=भागते हैं। रन=रण में। पान करैं=खून पीते हैं। चंडी=रणचंडी। गलगज्जैं=किलोल करते हैं। निहारा=देखकर। जच्छ=(यक्ष) एक प्रकार की देव-योनि। वरैं=वरण करती हैं। कायर=डरपोक। बिमुख भए=भाग खड़े हुए। साका=नामवरी।

३३२—इकसार=एक सा, वरावर।

३३३—कुटिल गति=टेढ़ी चालवाली। कोटि=धनुप के छोर। आनित=खून। कढ़ी...अपार=धनुष के छोर रूपी उद्गम से टेढ़ी चालवाली अपार रुधिर-सरिता वह निकली। मज्जन करत=स्नान करते हैं।

३३४—मरं परं=मरे हुए पड़े हैं। मत्त दंती=मतवाले हाथी। सुंड-खंड़=सूँड कटे। उभै=(उभय) दोनों। ओर=पक्ष। उभै ओर=दोनों पक्ष, दोनों सेनाएँ। ते=वे। कूल=तट। राजैं=शोभित हैं। प्रचंडे=प्रवल, भारी। लसैं=शोभित होती है। लाहू लसै वारिधारा=खून का वहना ही नदी की धारा है। कौल=(कमल)। कलंगी=सिर से गिरी हुई कलँगी। मनो........ अपारा=रुधिर-धारा में गिरी हुई कलँगियाँ हो मानों कमल के फूल हैं।

३३५—अंगभंग=कटे-फटे शरीर से। तुरंग=घोड़ा। तिरैं=तैरते हैं। ग्राह=मगर। तिरें......एकएकं=अंगभंग पड़े हुए

घोड़े ऐसे जान पड़ते हैं मानों उस रुधिर-सरिता में एक दूसरे को पकड़ कर मगर तैर रहे हों। रुंड=धड़। पाज=बाँध। सेवाल=सेवार। मनो...जूटे=कटे हुए सिरों के बाल ऐसे जान पड़ते हैं मानों उस नदी में बाँध के स्थान का आश्रय पाकर सेवार उग आई हो (बाँध के पास किनारे पर पानी स्थिर हो जाता है इसी से वहाँ सेवार उग आती है)।

३३६—खग्ग=(सं० खड्ग) तलवार । खंडा=खाँड़ा । दुधारे=दुतरफा धारवाले शस्त्र । ब्याल=सर्प । कारे=काले। फिरैं......कारं=रण में वीरों के हाथ से गिरी हुई तलवारें तथा अन्य शस्त्र ऐसे जान पड़ते हैं मानों रक्त नदी में काले सर्प घूम रहे हों (कवि-परंपरा में तलवार का रंग काला माना गया है, इसी से 'ब्याल कारे' लिखा है)। तनंत्रान=कवच । जंत्र=(यंत्र) मशीन (नौका आदि)। जाल=समूह।

३३७—वहै बस्त्रफेनं=उस रुधिर-धारा में बहते हुए (उज्ज्वल) वस्त्र ही मानों नदी में उठा हुआ फेन हो। अत्र=(अस्त्र) फेंककर मारे जानेवाले हथियार। मीन=मछली। फसे अस्त्रमान=रुधिर में फँसे हुए अस्त्र मानों मछली हों। मक्र=(मकर) मगर। सूर= (शूर) वीर। सावंत=बहादुर। पीन=मोटे, स्थूलकाय। महा... पीन=रणभूमि में पड़े हुए मोटे-मोटे शूर-सावंत उस नदी के बड़े-बड़े मगरों के समान हैं। घोरं=तीव्र, भीषण। गिरं गर्ब-वृच्छ=गर्वरूपी वृक्ष इस धारा के वेग से गिर पड़ा है।

३३८—भौंर=(भ्रमर) जल में उठनेवाला आवर्त। भीम= भयंकर, भारी। चक्र=एक गोल हथियार । कलथ्यंत=व्यथा से लोट-पोट होनेवाले। तरंग=लहर। ललाम=सुंदर । कलथ्यंत... ललामैं=व्यथा से शूरों का लोट-पोट होना उस नदी की तरंगें हैं। कपाली=महादेव। पान=जलपान एवं रुधिर-पान । तृषावंत= प्यासे।

३३९—भिरे=लड़े। गात=(गात्र) शरीर। भरं गात धोवैं=भली भाँति अपना शरीर धोते हैं। कलोलैं=क्रीड़ा करते हैं। ताप=गर्मी। ताप खोवैं=अपनी गर्मी दूर करते हैं। कोक=चक्रवाक। परैं...जूटे=आकाश से टूट पड़नेवाले गृद्ध ही मानों शोक-रहित होकर उस नदी के तट पर एकत्र रहनेवाले चक्रवाक और हंस हैं।

३४०—भीम=भीषण। गभीर=गहरी। कम्मान=धनुप। लीनं=लिया।

सूचना—३३३ से ३४० तक उत्प्रेक्षा से पुष्ट 'सांगरूपक' है।

३४१—गहि=पकड़कर। कर=हाथ। तानि=खींचकर। इमि=इस प्रकार। सर=तालाब। वारिधार=पानी की धारा। जिमि=समान। दल=सेना। फेरि=पुनः। कोऊ=कोई भी। वाग=घोड़े की रास। छिति=रणभूमि। जड़गति=जड़ पदार्थ की भाँति, स्थिर। श्रोणित=(सं० शोणित) खून। अन्हाय=स्नान कर के। हायल=घायल, बेकाम। जकि=चकित होकर। थकि रहे=स्थकित हो गए, स्थिर रह गए।

३४२—भूर=(भूरि) बहुत, अनेक। करनी=कार्य, कर्तव्य। रनखेत=रणक्षेत्र। संगर=युद्ध।

३४३—सर=बाण। विकल=व्याकुल। दल=सेना। गहि=पकड़कर। पर्यो=प्रविष्ट हुआ। ज्यों=समान।

३४४—नाग=सर्प। खगराज=गरुड़। ज्यौं=जैसे। हनै=मारता है। गलगाज=गरजता है।

३४५—करवाल=तलवार। हँकारि=ललकार। दलं=सेना को। दहपट्टि=चौपट करके। महि=पृथ्वी पर। जुग=दो। विहंडि=(विखंडि) खंड करके, काटकर। मनु=मानों। वंडि दिए=बाँट दिया।

३४६—करै रनरंग=रण में रंग करता है, वीरता दिखलाता है।

चरै=खा जाता है। केहरि=सिंह। कुरंग=हरिण। कलत्थ=कलप कर, पीड़ित होकर। मत्थ=माथा, सिर। पग=(सं० पद)। हत्थ=(हस्त) हाथ।

३४७—अघायल=भरे हुए, लथपथ। चायल=चाव। चायलचूर=चाव में चूर, अभिलाषायुक्त। तनत्रान=कवच। लटे=शिथिल हो गए, मुरझा गए। रिपुरंग=शत्रु का प्रभाव। ओप=कांति।

३४८—धावन लगे=दौड़ने लगे। दारुन=भीषण। कबंध=धड़। उदार=प्रशस्त, विशाल। मार=लड़ाई।

३४९—जहीं=ज्यों ही। समसेर=तलवार। मुख फेर दिए=उन्हें पराजित करके भगा दिया। भाजत=भागती हुई। तहीं=त्यों ही। हिय=(हृदय) मन में। हारि गया=शिथिल हो गया, पराजित हो गया।

३५०—जोर दग्यो=प्रबल हो गया। हाँकि हाँकि=दौड़ा कर।

३५१—जुज्झे=लड़े। राम-रावन रन जुज्झे=(मानों) राम और रावण रण में लड़े। पारथ=(पार्थ) अर्जुन। कुरुखेत=कुरुक्षेत्र (जहाँ महाभारत का युद्ध हुआ था)। अरुज्झे=लड़े, उलझे, भिड़े। गाजि=गरजकर। पुहुमि=पृथ्वी। पुहुमिराय=सम्राट, राजा। युद्ध-काल=युद्ध के समय। सँहार्‌यो=मारा। गरब गंज्यो=गर्व तोड़ दिया। तिमि=उसी प्रकार। सूरन सजे=वीरों से सुसज्जित। निरतत=नाचते हैं। नारद=एक ऋषि जो झगड़ा लगाने के लिये प्रसिद्ध हैं, यहाँ झगड़े का स्वरूप। डिमि-डिमि=डमरू की ध्वनि।

३५२—घमसान=युद्ध। खेत=रणक्षेत्र। सिगरे=सब। काम आया=मारा गया। नषत=(नक्षत्र) तारे। भोर=प्रातःकाल। नषत ज्यों भोर के=प्रातःकालीन नक्षत्र की भाँति तेजहीन हो गए।

३५३—दल-बल = सेना। सान गँवाइ = प्रतिभा नष्ट करके। बर = श्रेष्ठ। सिर नाइ = सिर नीचा करके, लज्जित होकर। पील = हाथी। जित तित लखत = इधर-उधर देखता हुआ।

३५४—ऐसें = इस प्रकार। वधिक = शिकारी। बदन = मुख। सनमानं = संमान किया।

३५५—झुक्के सीस = मस्तक नमित हुए, वे लज्जित हो गए। सस्तर = शस्त्र। सस्तर डारं = हथियार रख दिए। मग = मार्ग। मनमारं = उदास।

३५६—रंग = उमंग, उत्साह। निसान = झंडे।

३५७—फते = विजय। राय = हम्मीरराय। खेत = रणक्षेत्र में। झारन लागे = तलवार चलाने लगे। निसान = झंडे। झुक निसान = शत्रु के झंडे नीचे हो गए, शत्रु पराजित हो गया।

३५८—विधि = ईश्वर। केहूँ = किसी ने भी। तुरतै = तुरत ही। महल तें बूझी = राजमहल से समाचार पुछवाया। अनसूझी = अज्ञान की बात, अविचार की बात।

३५६—कोट-दिसि = गढ़ की ओर। लखावैं = दिखाई पड़ते हैं। जस लीन्हा = विजय प्राप्त की।

३६०—आन = (अन्य) दूसरा। दिसि = ओर। निसानं = झंडे। रिपु = शत्रु। फते = विजय। खेत = रणभूमि। बरियाई = बलपूर्वक।

३६१—कर = का। करिबो = करना। तौन = वह। असनाव = स्नान।

३६२—गुनि = विचार कर। रनिवास = रानियों के रहने का महल। जौहर = राजपूतों का संकटापन्न अवस्था में मर मिटने का व्रत (देखो छंद-संख्या २८८ का नोट)। विधि-अनरथ-परकास = चौपट होने का आरंभ।

३६४--खंड=टुकड़ा । कटारी खाय=कटारी मारकर। केतिक=कितनी ही। दारू=लकड़ी। दारू=बारूद । जोर=अधिक।

३६५--परीं=गिरीं । गिरि=गिरकर। गिरि=पर्वत से। गेह=घर।

३६६--बेरि=देर। उलट्यो=लौटा। दल फेरि=शत्रु की सेना को भगाकर।

३६७--जंग=युद्ध। गहगह=तेजी से। निसान=बाजे।

३६८--कुलाहल=शोर । बिरतंत=(वृत्तांत) समाचार। बखान=वर्णन।

३६९--सहस्र=हजार। निसान=झंडे।

३७०--स्रवन=कान। गहि मौन=मौन धारण कर, चुपचाप। बिधि-परपंच=ईश्वर की करतूत। न परत लखायो=जाना नहीं जाता।

३७२--करैहै=करावेगा। चाही=चाहा, इच्छा की। तौन=वह।

३७३--श्रीपति=विष्णु। बिरंचि=ब्रह्मा। पचि हारे=प्रयत्न करके थक गए। कोटि=करोड़। क्यिन=क्यों न। बरबस=जबर्दस्ती, अवश्य।

३७४--पावक=अग्नि। पौन=(पवन) वायु। हरतार=हर्ता, नाशकर्ता। करतार=कर्ता। लेखिए=समझिए। अंगिरा=एक ऋषि। सनक सनंदन सनातन=तीनों ब्रह्मा के पुत्र हैं। बिसेखिए=विशेष रूप से समझिए। सुरेस=इंद्र। अवरेखिए=गिनिए, जानिए। ईस=महादेव। अनंत=विष्णु। विधि=ब्रह्मा।

३७५--आगम=शास्त्र। निगम=वेद। लहत न=पाते नहीं। बलवंत=बली।

३७६--चर = चैतन्य । अचर = जड़ ।

३७७--करन = करनेवाला । अखेद = खेदरहित । निरबेद = संसार से विराग ।

३७८--समर-जीत = युद्ध में विजय । सदन = घर में । परपंच = कार्य, कर्तृत्व । निरधार = निश्चय । रंच = थोड़ा भी ।

३७९--बस = अधीन । और = अन्य । स्वबस = अपने अधीन । निहचै = निश्चय । विवेक = विचार ।

३८०--प्रमान = प्रामाणिक, माननीय । रिपु-भंग = शत्रु का नाश । राखि लीन्हो = रक्षा की ।

३८१--सबहिन = सबने । तजे परान = प्राण त्यागे । जान = जाने, नष्ट होने ।

३८२--अहचरज = आश्चर्य । ठाई = स्थान पर ।

३८३--बहुतेरो = बहुत । उभै = दोनों । जाहि = देखकर । तत्वज्ञान = वैराग्य । माहि = मुझे ।

३८४--इंद्रजाल = जादूगर का खेल । सम = समान । करनहार = कर्ता । नट = जादूगर । सरिस = (सदृश) समान । और को और = कुछ का कुछ । ठौर = स्थान ।

३८५--सिरजनहार = बनानेवाला । सरन = (शरण), आश्रय में । भार = बोझ । सुत = पुत्र । सिर दैहौं = सौपूँगा ।

३८६--जानि = समझकर ।

३८७--द्विजनि = ब्राह्मणों को । दरिद्र = गरीबी । भूरि = अत्यंत । खलन = दुष्टों को । प्रचंडनि = प्रबलों को । उताल मैं = शीघ्रता से । हार = पराजय । अरि = शत्रु । बिडारि = बिगाड़ कर, नष्ट करके । न्याइ = न्याय । निपटि दीनं = निपटारा कर दिया । हाल = समाचार । तात = पिता । सुंदरी = स्त्री, पत्नी । अरपि दैहौं = अर्पण कर दूँगा । गिरीस = महादेव । माल = मुंडमाला ।

३८८--काज=कार्य। विषाद=खेद, दुःख। नेक=कुछ, थोड़ा भी। सोधि=खोजकर, ढूंढ़कर। प्रबोधि=ढारस देकर। प्रसंग=कथा, समाचार। बांध देन=समझते हैं। उछाह=उत्साह। चक्कवै=चक्रवर्ती। ईस=महादेव। छिनीस=राजा। रौर=शोर। दोय=दोनों। अकुलाने=व्याकुल हो गए। अलकेस=कुबेर (दान के कारण)। सुंदरी=अप्सराएँ (वीरता के कारण वरण करने के लिये)। सुरेस=इंद्र। सदन=घर (इंद्रपुरी)।

३८९--साज=सामान। टीको=तिलक। नीर=जल। असनान=स्नान। दुजात=(द्विज) ब्राह्मण। कर=हाथ। करवाल=तलवार। नीको=अच्छा। दयो=दे दिया। ईस=महादेव। सुरलोक=इंद्रलोक। सची=इंद्राणी।

३९०—नरनाथ=राजा। सारे=सब। देववधू=अप्सरा। बर=श्रेष्ठ, बढ़िया। नभ=आकाश। ढुरें=ढुरते हैं, फेरे जाते हैं। चौर=(चमर) मुर्छल। चहूँ दिसि=चारों ओर। भारं=भारी। आनि=आकर। श्रीपति=विष्णु। हरि=विष्णु। सेवनहारे=सेवा करनेवाले।

३९१—अरिदल=शत्रु की सेना। दलमल्यो=नष्ट किया। हरिधाम=विष्णुलोक। धन=धन्य। छिति=पृथ्वी पर। छत्रपति=राजा।

३९२—माने=पूजा की। दुज=(द्विज) ब्राह्मण। सनमाने=संमान किया। हित=प्रेम। पिछाने=पहचाना। सुखसाने=सुखयुक्त, सुखदायक। बाम=स्त्री। धाम=घर। लाले=लालन-पालन किया। बाले=बालक। प्रतिपाले=पालन किया। या पुहुमि=यह पृथ्वी। घाले=मारे, नष्ट किया। चाम=चमड़ा। साका=नामवरी। जसीले=यशस्वी। समर=युद्ध। सुरेस=इंद्र। फारि=बेधकर। सिधारे=गए। सुरधाम=स्वर्ग। (पुराणों

में वर्णित है कि वीर लोग सूर्यमंडल को बेधकर उसी मार्ग से स्वर्ग जाते हैं)।

३९४—को = कौन । या = इस । धरती = पृथ्वी । परिहर्यो = छोड़ा ।

३९५—बलि-बावन = बलि और वामन की कथा प्रसिद्ध ही है। कुंती करन = कर्ण कुंती के सबसे बड़े पुत्र थे, जो सूर्य के अंश से उत्पन्न हुए थे। कर्ण दुर्योधन के पक्ष में थे, कर्ण ने कुंती के कहने पर यह प्रतिज्ञा की थी कि अपने भाइयों के प्राण कभी न लेंगे। सिवि कपोत = शिवि बड़े दानी थे। इन्होंने १०० यज्ञ करने की प्रतिज्ञा की थी। इंद्र डरा। उसने अग्नि को कबूतर बनाया और आप बाज बनकर उसका पीछा किया। कबूतर रक्षा के लिये शिवि की गोद में जा छिपा। राजा ने कबूतर के बराबर मांस अपने शरीर से तौल देने को कहा। पर तौलने में सारे शरीर का मांस भी कम पड़ गया, तब ये अपना सिर काटने लगे। तब भगवान् ने प्रकट होकर इनका हाथ पकड़ लिया और इन्हें स्वर्ग दिया। मीर = महिमा मंगोल। उदोत = प्रसिद्ध, प्रकट।

३९६—छिति = पृथ्वी । भानु = सूर्य । परताप = प्रताप । सों = से, द्वारा। जगत-उज्यारो = संसार को प्रकाशित करनेवाला।

३९७—बहुरि = फिर, पुनः। तनय = पुत्र। जहान = संसार।

३९८—रायसा = वृत्तांत। लखि = देखकर। सार = थोड़े में। छंदबद = छंदोबद्ध। सेखर = चंद्रशेखर वाजपेयी (कवि)।

४००—कर = हाथ, दो (२)। नभ = आकाश, शून्य (०)। रस = नवरस (९)। आतमा = आत्मा (१)। 'अंकानां वामतो गतिः' से संवत् १९०२ हुआ।

४०१—राधाबर = श्रीकृष्ण । कै = अथवा । श्रीनरेंद्र = पटियाला-नरेश। मृगराज = सिंह। प्रभु = स्वामी। लोक-मति = सांसारिक बुद्धिवाला, व्यापक बुद्धिवाला। दूजो = दूसरा।

४०२—रावरो = आपका। सिरमौर = श्रेष्ठ, शिरोमणि। द्विज-दीन = गरीब ब्राह्मण। निरखि = देखकर। निरखि आपनी ओर = अपने बड़प्पन को समझकर।

४०३—जौ लौं = जब तक। सुरपुर = देवलोक। सक्र = इंद्र। चिरंजीव = दीर्घजीवी।